



**मजदूर बच्चों और महिलाओं के साथ घुटनों तक भरे गंदे पानी में सामान की पोटली उठाकर सुरक्षित जगहों की तलाश में जा रहे**

## ड्रेन के गंदे पानी में डूबे मजदूरों के लिए पलायन बना मजबूरी

■ विवेकानंद और छोटूराम नगर में कई दिनों से कैद लोग नारकीय जीवन जीने को मजबूर

रवींद्र राठी ►► बहादुरगढ़

चारों तरफ बंदबू मारता सीवरेज का पानी और उसमें राहत की उम्मीद लगाए बैठे प्रवासी श्रमिकों का धैर्य जवाब देने लगा है। मजबूर होकर ये मजदूर बच्चों और महिलाओं के साथ घुटनों तक भरे गंदे पानी में सामान की पोटली उठाकर सुरक्षित जगहों की तलाश में जा रहे हैं। विवेकानंद नगर और छोटूराम नगर में कई दिनों से कैद लोग नारकीय जीवन जीने को मजबूर हैं। नेताओं और अफसरों के आने और फोटो खिंचवाने का क्रम भी जारी है। सेना बचाव एवं राहत कार्य में जुटी है। लेकिन हालात जिस तेजी से बिगड़े, उस अनुपात में सुधार नहीं रहे। सरकारी विभागों में तालमेल का अभाव, भ्रष्ट अधिकारियों की बेपरवाही और राजनीतिक अनदेखी ने बहादुरगढ़ को बाढ़ जैसे हालात से जूझने को मजबूर कर दिया है। चेतावनी के अनुपात में बेहद कम बरसात होने के बावजूद निकासी व्यवस्था की बंदहाल स्थिति ने बहादुरगढ़ शहर और गांवों की तस्वीर बदल दी है। यहां छोटूराम नगर, विवेकानंद नगर, एमआईई की गलियां गंदे पानी के तालाब में तब्दील हो चुकी हैं। कई इलाकों में घरों के भीतर घुटनों तक पानी घुस गया है, जिससे लोगों का रहना तक दूधर हो गया है। दुकानों के भीतर रखा सामान खराब हो रहा है। वहीं गरीब परिवारों के सामने दो वक्त की रोटी का संकट खड़ा हो गया है। इस आपदा की सबसे बड़ी मार दिहाड़ी मजदूरों और गरीब तबके पर पड़ी है। फैक्ट्रियों के साथ ही उनकी बस्तियों में पानी भरने से जनजीवन पूरी तरह ठप हो गया है।



बहादुरगढ़। गंदे पानी से निकलकर सुरक्षित स्थान की ओर जाते प्रवासी।



गलियों में भरे कई फुट पानी में खड़ी कारें

### विवेकानंद नगर में हालात बिगड़े

विवेकानंद नगर की कई गलियों में सीवर का पानी घरों में घुसने से छोटे बच्चे और बुजुर्ग इस स्थिति से सबसे ज्यादा परेशान हैं। कई फुट पानी में खड़े वाहन भी खराब हो रहे हैं। पार्षद संदीप दहिया ने बताया कि गली-मोहल्लों में भरे गंदे पानी से मच्छर पनपने लगे हैं। लोगों को डेंगू, मलेरिया और वायरल बुखार का डर सता रहा है। कई दिन परेशान रहने के बाद नगर परिषद और प्रशासन की ओर से सहायता मिली। स्थानीय निवासी कुण्ड गुलिया के अनुसार इसका स्थाई समाधान नहीं हुआ तो भविष्य में भी थोड़ी सी बारिश बड़ी तबाही में बदल

### रेलवे स्टेशन और बस अड्डे पर परिवारों की भीड़

जलभराव के चलते सैकड़ों मजदूर अपने परिवारों के साथ छोटूराम नगर छोड़ने लगे हैं। किसी ने अपने सामान को रिकशा या ट्रेले पर लाद लिया है, तो कोई सिर पर पोटली रखकर शहर की ओर बढ़ रहा है। रेलवे स्टेशन और बस अड्डे पर भी ऐसे परिवारों की भीड़ दिखाई देने लगी है। अधिकांश मजदूर परिवारों के सामने पेट पालने की समस्या खड़ी हो गई है। पूर्व पार्षद हरिमोहन धाकर ने बताया कि ज्यादातर प्रवासी रोज की कमाई से घर चलाते हैं। अब सप्ताह भर से काम-काज बंद है, ऐसे हालात में उनके लिए जीना तक मुश्किल हो गया है। लोग जुगाड़ के सहारे दिन काट रहे हैं। महिला मजदूर सुनीता ने बताया कि कमाई रुकी है, ऊपर से घर में पानी भरा है। न खाना बना पा रहे हैं, न बच्चों को स्कूल भेज पा रहे हैं। अब तो दूसरे इलाकों में रिश्तेदारों के सहारे ही रहना पड़ेगा।



बहादुरगढ़। मुंगेशपुर ड्रेन के किनारों को मजबूत करने में जुटे सेना के जवान।

## मुंगेशपुर ड्रेन के किनारों को मजबूत करने में जुटी सेना

बहादुरगढ़। शहर में बाढ़ जैसे हालात का कारण बनी मुंगेशपुर ड्रेन के किनारों को मजबूत करने में सेना की टीम जुटी हुई है। शनिवार को ड्रेन का कटाव रोक दिया गया है। एसडीआरएफ और विभागीय टीम सेना की मदद कर रही हैं। अब दोनों किनारों को मजबूत किया जा रहा है, ताकि भविष्य में ड्रेन ना टूटे। डीसी रविंद्र स्वप्निल पाटिल ने कहा कि सरकार की ओर से जल निकासी के सभी संभव उपाय करने के आदेश हैं। बता दें कि बहादुरगढ़ के रिहायशी क्षेत्र में जलभराव के कारण हजारों नागरिक परेशान हैं। सबसे अधिक परेशानी छोटूराम नगर, विवेकानंद नगर, एमआईई आदि इलाकों में हो रही है। हिसार से सेना की 22 मेक इंफैंट्री की 234 इंजीनियरिंग की टीम कर्नल गौरव सिंधवानी, कर्नल तपन सांगवान, लेफ्टिनेंट कर्नल वाईएस सलाथिया, मेजर लिम्से क्षितिज दीपक और कैप्टन जगजीत की अगुवाई में कार्य में जुटी हुई हैं। कर्नल गौरव और तपन ने कहा कि सेना जिला प्रशासन की मदद के लिए मुंगेशपुर ड्रेन को ठीक करने आई है। इसको जल्द ही बिल्कुल ठीक कर दिया जाएगा। किनारों को मजबूत किया जाएगा। एसडीएम नसीब कुमार सेना के साथ मौके पर लगातार समन्वय बनाए हुए हैं। नप के ईओ अरुण नांदल भी मौके पर डटे हैं।

### 15 हजार एकड़ में जलभराव : डीसी

डीसी ने बताया कि प्रशासन ने राहत शिविर की व्यवस्था कर दी है। रेलवे रोड पर अग्रसेन धर्मशाला में राहत शिविर की व्यवस्था की गई है। उनके अनुसार झज्जर जिले में बरसात के कारण लगभग 15 हजार एकड़ कृषि भूमि में जलभराव की रिपोर्ट प्राप्त हुई है। प्रभावित किसान क्षतिपूर्ति पोर्टल पर 15 सितंबर तक अपनी फसल खराब की रिपोर्ट दर्ज करवाएं। प्रशासन की प्राथमिकता है कि रिहायशी क्षेत्रों से तत्काल जल निकासी सुनिश्चित हो।

### लोगों को स्वस्थ रखने का भी जिम्मा



## सच्चाई के साथ तीन दशक



आप सभी जिलावासियों को हरिभूमि समाचार पत्र के

# 30वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

**अत्तर सिंह यादव Ex. Airforce**

प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य, सेवा प्रकोष्ठ, भाजपा पूर्व जिला अध्यक्ष एवं प्रदेश सचिव ओ. बी. सी. मोर्चा



# लगातार दमक रहे सोना-चांदी, आठ माह में दिया 36% व 42% तक रिटर्न

- ▶ रिटर्न देने में सभी एसेट्स को पीछे छोड़ा, निवेशक मालामाल
- ▶ सही रणनीति बनाकर निवेश किया जाए तो मिलेगा फायदा
- ▶ हाल में आई तेजी के बीच सोने में निवेश की सही प्लानिंग करें
- ▶ गोल्ड व सिल्वर पर आधारित ज्यादातर ईटीएफ ने 40% से ज्यादा रिटर्न दिया

## निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

दुनिया में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ की दहशत के बीच सोना-चांदी निवेश के सबसे भरोसेमंद विकल्प बनकर उभर रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक सोने ने इस साल अब तक 8 माह में करीब 36% तक और चांदी ने करीब 42% तक रिटर्न दिया है। यानी इन 8 महीनों में चांदी सोने से काफी आगे निकल गई है। अगर रुपये में बात करें तो चांदी 37,281 रुपये प्रति किलोग्राम महंगा हुई है। वहीं, सोना 27,976 रुपये प्रति 10 ग्राम महंगा हुआ है। जानकारों का कहना है कि इस साल के आखिरी तक रिटर्न के मामले में चांदी सोने को बहुत पीछे छोड़ सकती है। सोने लगातार बढ़ती कीमतों के बीच लोगों को अब इसमें प्लानिंग तहत निवेश करना होगा। वरना यह झटका भी दे सकता है। हालांकि कहा जाता है कि सोना पुराने समय से ही भरोसे का निवेश रहा है। सोने-चांदी की कीमतों में जबरदस्त तेजी देखी जा रही है। बीते एक साल में गोल्ड और सिल्वर पर आधारित ज्यादातर ईटीएफ ने भी 40% से ज्यादा एक्जट रिटर्न दिया



है। निवेशकों के लिए बड़ा सवाल यह है कि क्या इस तेजी के बाद अब भी सोने-चांदी में निवेश करना सही रहेगा? और अगर हां, तो किस तरीके से।

## सोने-चांदी की कीमतों रिकॉर्ड ऊंचाई पर

सोने-चांदी की कीमतें नई ऊंचाईयों पर चढ़ी हैं। इनका असर ईटीएफ पर भी पड़ा है। पिछले 12 महीनों में गोल्ड ईटीएफ ने औसतन 40.44% का रिटर्न दिया है। इस दौरान 16 गोल्ड ईटीएफ मार्केट में एक्टिव रहे, जिनमें टाटा गोल्ड ईटीएफ ने सबसे ज्यादा 40.76%, आईसीआईसीआई प्रूडिशियल गोल्ड ईटीएफ ने 40.74% और आदित्य बिरला सनलाइफ गोल्ड ईटीएफ ने भी 40.67% का मजबूत रिटर्न दिया।

## वर्षों बढ़ रही है सोने-चांदी की चमक

जानकारों के मुताबिक सोने और चांदी की कीमतों में यह उछाल जियो-पॉलिटिकल टेंशन, टैरिफ को लेकर जारी उथल-पुथल और इंडस्ट्रियल डिमांड की वजह से आया है। खासतौर पर सिल्वर की डिमांड सेमीकंडक्टर, सोलर पैनल, इलेक्ट्रिकल व्हीकल (ईवी) और वॉन टेक्नोलॉजी में ज्यादा हो रही है। यही वजह है कि चांदी 10 साल के ऊंचे स्तर पर पहुंची है। सोना पारंपरिक रूप से एक डिफ्लेक्शन एसेट माना जाता है, जो बाजार में अनिश्चितता और डर के समय निवेशकों को सुरक्षा देता है। यही कारण है कि हर अस्थिर दौर में सोने की कीमतें ऊपर जाती हैं।

## पोर्टफोलियो में कितना हो गोल्ड-सिल्वर का हिस्सा

आपके पोर्टफोलियो में सोने-चांदी की हिस्सेदारी 10-20% से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। बाकी निवेश इक्विटी और डेट में होना चाहिए। आमतौर पर 80:20 का इक्विटी-डेट रेशियो संतुलित माना जाता है, और सोना-सिल्वर इसमें हैंजिंग यानी रिस्क से बचाने का काम करते हैं। इसका मतलब है कि गोल्ड और सिल्वर आपको लगातार ऊंचा रिटर्न नहीं देंगे, लेकिन आपके पोर्टफोलियो को अस्थिरता से बचाने और डाइवर्सिफिकेशन देने का काम करेंगे।

## ईटीएफ और एसआईपी के जरिये निवेश बेहतर

सोने-चांदी की मौजूदा ऊंची कीमतों पर एकमुश्त निवेश करना जोखिम भरा हो सकता है। बेहतर है कि निवेशक एसआईपी (एसआईपी) के जरिये धीरे-धीरे इनमें पैसा लगाएं। इससे कीमतों के उतार-चढ़ाव की एक्जोजिंग हो जाती है और लंबी अवधि में बेहतर नतीजे मिलते हैं। ईटीएफ सोने-चांदी में निवेश का सबसे आसान और ज्यादा पारदर्शी तरीका है। गोल्ड ईटीएफ में हर यूनिट आम तौर पर 1 ग्राम सोने की वैल्यू को बताती है। इन्हें आप डिमेंट अकाउंट के जरिये शेयरों की तरह खरीद-बेच सकते हैं। सिल्वर ईटीएफ भी इसी तरह काम करते हैं।

## निवेशकों के लिए क्या है सही रणनीति

अगर आप सोने-चांदी में निवेश करना चाहते हैं तो इसे स्पेक्युलेटिव यानी सट्टे नजरिए से नहीं बल्कि एसेट एलोकेशन के नजरिए से देखें। यह लंबे समय में आपके पोर्टफोलियो में स्टैबल और सुरक्षित बनाने है।  
▶ पोर्टफोलियो में गोल्ड और सिल्वर की हिस्सेदारी 10-20% तक रखें  
▶ एकमुश्त निवेश की बजाय एसआईपी से धीरे-धीरे खरीदें  
▶ ईटीएफ को प्रायोरिटी दें क्योंकि वे पारदर्शी, आसान और लिक्विड होते हैं



▶ अगर प्रोफेशनल मैनेजमेंट चाहिए तो मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड भी विकल्प हो सकते हैं

## सावधानी से बढ़ाएं कदम

सोने-चांदी में तेजी के बावजूद निवेशकों को सावधानी से कदम बढ़ाना चाहिए। यह सही है कि हाल में ईटीएफ ने 40% तक का रिटर्न दिया है, लेकिन भविष्य में इनका रोल मुख्य रूप से पोर्टफोलियो को स्टैबल रखने और जोखिम कम करने का रहेगा। सही रणनीति यही है कि इन्हें लंबी अवधि के लिए एसेट एलोकेशन का हिस्सा बनाएं, न कि शॉर्ट-टर्म मुनाफे के लिए। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि 2025 की पहली छमाही में सोने में जो तेजी देखी गई है, वह लंबी खिंच सकती है और अब नई खरीदारी से बचना चाहिए, क्योंकि कीमतें पहले से ही काफी ऊंचाई पर पहुंच गई हैं।

# क्या होती है नो-कॉस्ट ईएमआई क्या सच में नहीं लगता ब्याज?

## जानकारी

बिजनेस डेस्क

त्यो हारी सीजन आते ही ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्मों और बैंक 'नो-कॉस्ट ईएमआई' का खूब प्रचार करते हैं। मोबाइल, लैपटॉप, टीवी से लेकर फ्रिज और वॉशिंग मशीन तक, हर जगह यह ऑफर देखने को मिल जाता है। सुनने में तो यह बहुत लुभावना लगता है कि महंगी चीज बिना ब्याज के आसान किस्तों में मिल जाएगी। इसे देखकर अक्सर ग्राहक भी ललचा जाते हैं और ज्यादा से ज्यादा सामना खरीदने का प्रयास करते हैं। ऐसे त्योहारी सीजन में खासकर होता है। लेकिन क्या नो-कॉस्ट ईएमआई सच में 'फ्री' है? इस रिपोर्ट में हम आपको बताने जा रहे हैं ऐसे ही कुछ तथ्य जिनसे पता चलेगा की नो-कॉस्ट ईएमआई कभी भी फ्री नहीं होता। इसके कुछ नुकुछ हैंडक चार्ज जरूर होते हैं, जिन्हें बहक बड़ी अंशानी से एडजस्ट करते हैं और कस्टमर को पता तक नहीं चलने देते। आइए एक्सपर्ट समझते हैं नो-कॉस्ट का पूरा खेल। जानकारों का कहना है कि नो-कॉस्ट ईएमआई का मतलब यह होता है कि जब आप कोई प्रोडक्ट किस्तों में खरीदते हैं, तो आपको अतिरिक्त ब्याज नहीं देना पड़ता। लेकिन हकीकत में 'नो कॉस्ट' ईएमआई पूरी तरह से फ्री नहीं होती, बल्कि इसमें ब्याज या चार्ज को अलग तरीके से एडजस्ट किया जाता है।

- ▶ जानिए कैसे रिटेलर और बैंक ब्याज को एडजस्ट करते हैं
- ▶ किस तरह सही ऑफर चुनकर बचत की जा सकती है
- ▶ कोई भी सामान खरीदने से पहले एक बार जरूर देख लें
- ▶ तकनीकी रूप से देखें, तो 'नो कॉस्ट ईएमआई' कभी पूरी तरह मुफ्त नहीं होता



## कैसे काम करती है नो-कॉस्ट ईएमआई

**डिस्काउंट या सब्सिडी:** अब मान लीजिए कि आपने 30,000 का स्मार्टफोन ईएमआई पर खरीदा। इसकी ईएमआई पर बैंक ब्याज लेना, क्योंकि यही तो उसका बिजनेस है। सामान्य ईएमआई पर बैंक 12% ब्याज दर से 12 महीने की ईएमआई बनाएगा। ऐसे में कुल लागत लगभग 31,800 रुपये हो जाती, लेकिन रिटेलर या ब्रांड आपको ब्याज जितना डिस्काउंट दे देता है। उसल में आप कुल 30,000 ही चुकते हैं। 1,800 के ब्याज का बोझ कंपनी उठा लेती है। कई ऑफर में ब्याज सीधे नहीं दिखाया जाता। यानी आपको लगता है नो कॉस्ट ईएमआई है, कोई ब्याज नहीं लगेगा। जैसे कि प्रोडक्ट का केश प्राइस 30,000 है। डिस्काउंट के साथ यह 27,000 में मिलता। ईएमआई पर वही प्रोडक्ट 30,000 के कुल ईएमआई में बांट दिया गया। आपको लगता है नो कॉस्ट ईएमआई है, लेकिन आप 3000 रुपये की बचत गंवा रहे।

**क्या वाकई मुफ्त है नो-कॉस्ट ईएमआई:** अगर तकनीकी रूप से देखें, तो नो कॉस्ट ईएमआई कभी पूरी तरह मुफ्त नहीं होता। अगर रिटेलर सब्सिडी दे रहा है तो उसका खर्च कंपनी वहन कर रही है, जिससे उसका मार्जिन घटता है। अगर कीमत बढ़ाकर एडजस्ट किया गया है तो ग्राहक को इनडायरेक्ट तरीके से ब्याज ही चुकना पड़ता है।  
**कई बार नहीं मिलते ऑफर:** कई बार नो कॉस्ट ईएमआई के साथ अन्य डिस्काउंट ऑफर उपलब्ध नहीं होते। यानी केशबैंक या कूपन का फायदा हाथ से जा सकता है। जैसे कई बार कंपनियां 30,000 के प्रोडक्ट का एएमआई ही 32,000 लिख देती हैं और नो कॉस्ट ईएमआई पर बेचती हैं। ग्राहक को लगता है कि ब्याज नहीं लगा, जबकि उसने पहले से बड़ी हुई कीमत चुका दी।

## क्या है आरबीआई का नियम

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने 2013 में साफ किया था कि नो कॉस्ट ईएमआई स्कॉप्स में ब्याज शुल्क दिखाना मामक हो सकता है। इसके बाद एनबीएफसी और बैंकों ने इन ऑफर्स को अलग तरह से डिजाइन किया। अब प्रिवेटकली ब्याज का बोझ मैनुफैक्चरर या रिटेलर उठाना है, ग्राहक को 'नो कॉस्ट' का अनुभव देने के लिए।

## इन बातों पर जरूर दें ध्यान

एमआरपी और सेलिंग प्राइस चेक करें। जैसे कि क्या ईएमआई प्रोडक्ट अगली डिस्काउंट प्राइस पर मिल रहा है या बड़ी हुई कीमत पर? ऑफर्स की तुलना करें। कई बार सीधा डिस्काउंट ऑफर लेना नो कॉस्ट ईएमआई से सस्ता पड़ता है। प्रोसेसिंग फीस देखें। कुछ बैंकों में प्रोसेसिंग फीस या जीएसटी अलग से लिया जाता है। टेब्योर को जरूर समझें। जैसे कि ईएमआई कितने महीनों में देंगे और क्या पहले भुगतान करने पर कोई डिस्काउंट लगेगा? अपने बजट में भी ध्यान दें। किस्तों में पेमेंट आसान लगता है, लेकिन खर्च बढ़ाने का लालच भी दे सकता है।

# सैलरी का सिर्फ 10 पर्सेंट हर महीने बचाकर भी बन सकते हैं करोड़पति

- पहले लक्ष्य तय करें, इसके बाद लंबे समय तक निवेश में डटे रहें
- 30 साल में बनाया जा सकता है 1.23 करोड़ का फंड
- छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश बना देगा धनवान

आज के समय में हर किसी का सपना होता है कि वह रिटायरमेंट तक अपने लिए एक बड़ा फंड जमा कर सके, लेकिन कई लोग सोचते हैं कि करोड़ों रुपये की बचत के लिए बहुत बड़ी सैलरी होनी चाहिए। जबकि सच यह है कि छोटी-छोटी बचत और लंबे समय तक निवेश की आदत किसी को भी करोड़पति बना सकती है। एक उदाहरण से आप इसे बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी अपनी सैलरी का सिर्फ 10% हर महीने बचाकर एसआईपी के जरिए 30 साल में 1.23 करोड़ रुपये का फंड जमा कर सकते हैं। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि कैसे एक निजी कंपनी में काम करने वाले भी धीरे-धीरे करोड़ों रुपये का फंड बना सकते हैं।

## ऐसे समझें निवेश का गणित

मान लीजिये आपकी उम्र अभी 22 साल है और वह एक प्राइवेट कंपनी में काम करते हैं। आपकी हर महीने की सैलरी 40,000 रुपये है। युवा उम्र में ही आपने तय कर लिया कि वह अपनी रिटायरमेंट की प्लानिंग अभी से शुरू करने में तो आपको हर महीने अपनी कमाई का सिर्फ 10% यानी 4,000 को न्यूयुअल फंड की एसआईपी में लगाना शुरू करना होगा। इसे आप किसी भी हालत में निकासने नहीं और समय के साथ अपने फंड का बढ़ाते जाएंगे। आप देखेंगे की कुछ ही समय में आपका पैसा बढ़ने लगेगा।

## 50 की उम्र तक करोड़पति बनने

अगर आप अपना लक्ष्य लेकर चलते हैं और निवेश को लगातार बढ़ाते जाएंगे तो आखिरी से 50 साल की उम्र तक करोड़पति बन सकते हैं। इसके कंपउजिंग का पैसा आपकी रकम को और बढ़ाता जाएगा। आपका लक्ष्य था कि जब वह 50 साल की उम्र को पार करें, तो उसके पास एक करोड़ रुपये से ज्यादा का रिटायरमेंट फंड हो। इस तरह आपका लक्ष्य पूरा हो सकेगा। इसके लिए आपको लगातार 30 साल तक 4,000 हर महीने एसआईपी में निवेश करना जरूरी होगा। एसआईपी के लिए 12% सालाना रिटर्न वाले इक्विटी म्यूचुअल फंड को चुनना होगा।

## बचत

बिजनेस डेस्क



## पूरा कैलकुलेशन

आपने 30 साल तक हर महीने 4,000 की एसआईपी की। इस तरह उसका कुल निवेश 4,000 x 12 महीने x 30 साल = 14,40,000 रुपये हुआ। इस निवेश पर उसे 12% की औसत वार्षिक रिटर्न दर मिली। कंपउजिंग के जादू से 30 साल बाद उसका निवेश बढ़कर 1,23,23,893 रुपये हो गया। यानी, 14.4 लाख रुपये निवेश करने पर उसे 1,08,83,893 का रिटर्न मिला। यह दिखाता है कि लंबे समय तक नियमित निवेश करने से छोटी रकम भी करोड़ों में बदल सकती है।

## युवाओं के लिए बड़ी सीख

यह कहानी हर युवा के लिए प्रेरणादायक हो सकती है जो अपनी रकम को बढ़ाना चाहते हैं। अक्सर लोग सोचते हैं कि रिटायरमेंट या भविष्य की प्लानिंग के लिए बड़ी सैलरी या मोटा निवेश जरूरी है, लेकिन सही रणनीति, अनुशासन और जल्दी शुरुआत से यह लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। अगर आप 10 साल बाद यानी 32 साल की उम्र में निवेश शुरू करता, तो उसे 20 साल का समय मिलता। इतने समय में उसका निवेश लगभग आधा ही होता। इससे साबित होता है कि निवेश जितनी जल्दी शुरू करें, उतना बेहतर।

## ये मंत्र भी अपनाएं

1. वित्तीय शिक्षा प्राप्त करें

वित्तीय शिक्षा आपको पैसे के प्रबंधन, निवेश व बचत के बारे में जानने में मदद करेगी। यह आपको वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ठोस योजना बनाने में मदद करेगी।

2. नियमित बचत करें

नियमित बचत करना करोड़पति बनने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अपने आय का एक हिस्सा नियमित रूप से बचाएं और इसे निवेश में लगाएं।

3. निवेश करें

निवेश करना आपके पैसे को बढ़ाने का एक अच्छा तरीका है। शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड, और रियल एस्टेट जैसे विभिन्न निवेश विकल्पों का पता लगाएं और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश करें।

4. व्यवसाय शुरू करें

व्यवसाय शुरू करना करोड़पति बनने का एक अच्छा तरीका है। अपने आय का एक हिस्सा निवेश के अनुसार व्यवसाय शुरू करें और इसे सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत करें।

5. नेट वर्थ बढ़ाएं

नेट वर्थ बढ़ाने के लिए, अपनी आय बढ़ाने और व्यय कम करने पर ध्यान दें। अपने खर्चों का भुगतान करें और अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत करें।

6. धैर्य रखें

करोड़पति बनने में समय लगता है। धैर्य रखें और अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करते रहें।

7. वित्तीय अनुशासन

वित्तीय अनुशासन करोड़पति बनने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनुशासन में रहें और अपने व्यय को नियंत्रित रखें।

8. नेटवर्क बनाएं

नेटवर्क बनाना करोड़पति बनने में मदद कर सकता है। अपने उद्योग में लोगों से मिलें और अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए नेटवर्क का उपयोग करें।

9. जोखिम उठाएं

जोखिम उठाना करोड़पति बनने का एक हिस्सा है। अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जोखिम उठाने के लिए तैयार रहें, लेकिन जोखिम को प्रबंधित करने के लिए भी तैयार रहें।

10. सीखना जारी रखें

सीखना जारी रखना करोड़पति बनने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उद्योग में नवीनतम रुझानों और तकनीकों के बारे में सीखें व अपने कौशल को बेहतर बनाने के लिए काम करें।

## प्लानिंग जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे निवेश की रफ्तार को भी बढ़ाएं, इससे जल्द पैसा बढ़ेगा

अनावश्यक खर्च करने से बचें, ऑफर का देखकर ललचाएं नहीं निवेश की अच्छी रणनीति बनाएं और अपने भविष्य को सुरक्षित करें

# जीवन में आगे बढ़ने के साथ, बढ़ाते जाएं अपना निवेश, स्टेप अप एसआईपी आपको अमीर बनाने में निभाएगी बड़ी भूमिका

## स्टेप-अप एसआईपी क्या है?

स्टेप-अप एसआईपी (जिसे टॉप-अप एसआईपी भी कहा जाता है) एक ऐसी सुविधा है जिसमें आप अपने एसआईपी निवेश को हर अंतराल पर (सालाना या अर्धवार्षिक) एक निश्चित राशि या प्रतिशत के हिसाब से बढ़ा सकते हैं। इसका मतलब है कि हर महीने एक ही राशि निवेश करने की बजाय, आप जैसे-जैसे कमाते हैं, वैसे-वैसे अपना निवेश भी बढ़ाते हैं।

## आपकी बढ़ती आय और खर्चों के साथ तालमेल

जब आपकी सैलरी बढ़ती है या प्रमोशन होता है, तो आपकी जीवनशैली भी बेहतर होती है। शायद आप नई बाइक खरीदते हैं, बेहतर फ्लैट में शिफ्ट होते हैं, या खूब घूमते हैं। ऐसे में खर्च बढ़ता है और आर्थिक लक्ष्य भी बड़े हो जाते हैं। एसआईपी को स्टेप-अप करके आप यह सुनिश्चित करते हैं कि आपकी बढ़ती आय और आकांक्षाओं के साथ आपके निवेश का तालमेल बना रहे।

## महंगाई को मात देने के लिए निवेश जरूरी

हर साल महंगाई की वजह से जीवन-यापन में



होने वाला खर्च बढ़ता रहता है। अगर आपकी एसआईपी की राशि एक स्थान ही रहती है, तो भविष्य में वह आपकी जरूरतों, लक्ष्यों को पूरा नहीं कर पाएगी। एसआईपी बढ़ाने से आपका निवेश तेजी से बढ़ता है और आप महंगाई के असर से बेपरवाह रह सकते हैं।

## बड़े लक्ष्य जल्दी हासिल करें

स्टेप-अप एसआईपी के जरिए आप अपने आर्थिक लक्ष्यों को जल्दी हासिल कर सकते हैं। इसकी मदद से आप बड़े सपनों जैसे लक्जरी कार, विदेश यात्रा या रिटायरमेंट के लिए बड़ी

रकम को भी बिना किसी आर्थिक तनाव के हासिल कर सकते हैं।

## चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत का जादू

हर साल एसआईपी की राशि थोड़ी सी भी बढ़ाने पर लंबे समय में आपकी संपत्ति में बड़ा फ्रक देखने को मिल सकता है। जितनी जल्दी और जितना अधिक आप निवेश करते हैं, रिटर्न उतना ही ज्यादा होता है। इसी को चक्रवृद्धि ब्याज की ताकत कहते हैं।

## स्टेप-अप एसआईपी कैसे काम करता है?

- ▶ मान लीजिए आप 5,000 रुपये प्रति माह की एसआईपी शुरू करते हैं, जिसमें हर साल 1,000 रुपये स्टेप-अप करते हैं।
- ▶ पहले साल में, आप 5,000 रुपये/माह निवेश करते हैं
- ▶ दूसरे साल में, यह 6,000 रुपये/माह हो जाता है
- ▶ तीसरे साल में, 7,000 रुपये/माह, और यह इसी तरह आगे बढ़ता है।
- ▶ धीरे-धीरे बढ़ती एसआईपी आपकी बढ़ती सैलरी के साथ मेल खाती है। जैसे-जैसे आपका वेतन बढ़ता है, आपका निवेश भी बढ़ता है और आपकी जेब भर और एकसाथ ज्यादा बोझ नहीं पड़ता।

## स्टेप-अप एसआईपी बेहतरीन तरीका

स्टेप-अप एसआईपी यह सुनिश्चित करने का एक आसान, लेकिन असरदार तरीका है कि आपका निवेश आपकी जिंदगी की गति के साथ आगे बढ़े। जैसे-जैसे आपकी आमदनी और जरूरतें बढ़ती हैं आप अपनी एसआईपी को बढ़ाकर नए सपनों और आर्थिक लक्ष्यों को हासिल करने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होंगे। तो, क्या आप निवेश का सही कदम उठाने के लिए तैयार हैं?

## ऐसे तैयार करें निवेश की रणनीति

**विविधीकरण:** विविधीकरण एक महत्वपूर्ण निवेश रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश को विभिन्न परिस्थितियों में फैलाने हैं, जैसे कि शेयर, बॉन्ड, रियल एस्टेट, और अन्य। इससे जोखिम कम होता है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**लंबी अवधि का निवेश:** लंबी अवधि का निवेश एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश को लंबी अवधि के लिए रखते हैं। इससे आपको बाजार की अस्थिरता से बचने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**नियमित निवेश:** नियमित निवेश एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप नियमित रूप से एक निश्चित राशि निवेश करते हैं। इससे आपको बाजार की अस्थिरता से बचने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**जोखिम प्रबंधन:** जोखिम प्रबंधन एक महत्वपूर्ण निवेश रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश को जोखिम को प्रबंधित करते हैं। इससे आपको अपने निवेश को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश:** वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार निवेश करते हैं। इससे आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।  
**निवेश की लागत को कम करना:** निवेश की लागत को कम करना एक महत्वपूर्ण रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश की लागत को कम करते हैं। इससे आपको अपने रिटर्न को बढ़ाने में मदद मिलती है।  
**नियमित रूप से पोर्टफोलियो की समीक्षा करना:** नियमित रूप से पोर्टफोलियो की समीक्षा करना एक अच्छी रणनीति है जिसमें आप अपने निवेश पोर्टफोलियो की समीक्षा करते हैं और आवश्यकतानुसार बदलाव करते हैं। इससे आपको अपने निवेश को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है और रिटर्न बढ़ सकता है।

**खबर संक्षेप**

**विश्वकर्मा महाकुंभ का दिया निमंत्रण**

बहादुरगढ़। हरियाणा सरकार द्वारा 17 को रोहताक में आयोजित होने वाले राज्य स्तरीय भगवान विश्वकर्मा महाकुंभ का निमंत्रण देने के लिए राज्यसभा सांसद रामचंद्र जांगड़ा शनिवार को बहादुरगढ़ पहुंचे। उन्होंने देवकरण धर्मशाला में आयोजित कार्यक्रम का संबोधित किया। जांगड़ा ने कहा कि हरियाणा सरकार संत महापुरुषों की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने और उनके आदर्शों पर चलने के लिए लगातार प्रयास कर रही है।

**सांस्कृतिक कार्यक्रमों में छात्रों ने दिखाई प्रतिभा**

झज्जर। डीएच लॉरेंस कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर वूमन में शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कॉलेज के चेयरमैन रमेश रोहिला ने शिक्षकों के साथ मिलकर देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने छात्रों को शिक्षक दिवस के महत्व से भी अवगत कराया। कार्यक्रम में छात्रों ने एक के बाद एक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं।

**महर्षि दयानंद विवि में मनाया शिक्षक दिवस**

रोहताक। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के फैकल्टी क्लब द्वारा शिक्षक दिवस पर समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय परिसर स्थित फैकल्टी क्लब सभागार में आयोजित हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में प्राध्यापक और उनके परिजन शामिल हुए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. राजबीर सिंह ने शिक्षक दिवस की सभी को बधाई देते हुए कहा कि शिक्षक केवल पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाते, वे व्यक्तित्व गढ़ते हैं, समाज का भविष्य निर्माण करते हैं।

**बहलबा में करंट लगने से गैस की मौत**

महम। बहलबा गांव में करंट लगने से एक भैंस की मौत हो गई। पशु पालक महा सिंह पुत्र जोधाराम ने बताया कि वह दो दिन पहले ही दूधारू भैंस 85 हजार रुपये में खरीद कर लाया था। उसी दिन तेज बरसात के कारण उसके मकान में पानी घुस गया। बताया कि मकान का पानी निकालने के लिए घर में मोटर पंप लगाया हुआ था। मोटर में करंट आ गया। जमीन गीली होने व मकान में पानी भरने होने के कारण पानी में करंट प्रवाहित हो गया। जिससे भैंस की मौत पर ही मौत हो गई। जिस वजह से उसको काफी आर्थिक नुकसान हो गया।

**दयानंद मठ में मासिक वैदिक सत्संग आज**

रोहताक। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा कार्यालय अधीक्षक सत्यवान आर्य ने बताया कि मासिक वैदिक सत्संग का आयोजन रविवार को सुबह 9 बजे से 12.30 बजे तक पंडित जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन दयानंद मठ में होगा। आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक रामनिवास आर्य (पानीपत) अपने भजन एवं उपदेशों के माध्यम से श्रोताओं को लाभान्वित करेंगे तथा विनय आर्य (मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) आर्यजनों को 30 अक्टूबर से 02 नवम्बर तक दिल्ली में हो रहे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के संबन्ध विस्तृत जानकारी देंगे।

**खेल प्रतियोगिता का उद्देश्य जवानों को शारीरिक तौर पर चुस्त दुरुस्त बनाना**

■ जिला पुलिस वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर  
शनिवार को पुलिस के जवानों को सक्रिय व तनावमुक्त बनाए रखने के उद्देश्य से पुलिस लाइन मैदान में वालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ डीसीपी जसलीन कौर ने किया और सभी वालीबाल टीमों के खिलाड़ियों का परिचय लेते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। डीसीपी ने बताया कि खेल प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य पुलिस के जवानों को शारीरिक तौर पर चुस्त दुरुस्त बनाना

**लाल सिंह कॉलोनी में जलभराव की समस्या से परेशान लोगों ने लगाया जाम**

**देवनगर कॉलोनी की हालत भी खस्ता, निरंतर बढ़ रहा पानी का स्तर**

- महिलाओं और पुलिस कर्मियों के बीच तीखी बहस
- संबंधित विभागों के जेई मौके पर पहुंचे और निकासी व्यवस्था शुरू करवाने पर लोगों ने जाम खोला

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में हुए जलभराव के कारण स्थिति गंभीर होती जा रही है। प्रशासनिक स्तर पर किए जा रहे प्रयास भी आमजन को नाकाफी नजर आने लगे हैं।

शनिवार को शहर की लाल सिंह कॉलोनी में जलभराव की समस्या से परेशान लोगों ने झज्जर बादली मार्ग पर जाम लगा दिया। जिसके कारण यातायात अवरूद्ध हो गया और लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। बाद में जाम की सूचना मिलने पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और लोगों को समझाने का प्रयास किया। लेकिन महिलाएँ समस्या का समाधान नहीं होने तक जाम लगाने पर अड़ी रही। महिलाओं और पुलिस कर्मियों के बीच तीखी बहस भी हुई। बाद में संबंधित विभागों के जेई मौके पर पहुंचे और निकासी व्यवस्था शुरू करवाने पर लोगों ने जाम खोला।

महिलाओं का कहना रहा कि जलभराव के कारण जहां उनके मकानों में दरारें आ गई हैं, वहीं बच्चों का घरों से बाहर निकलना भी दूभर हो गया है। पशुओं को बांधने के लिए भी स्थान नहीं है और बीमारियाँ फैलने का डर सताने लगा है। कई बार शिकायत करने के बावजूद भी समस्या का समाधान नहीं हुआ है। उन्हें मजबूर होकर जाम



झज्जर। झज्जर बादली मार्ग पर लगाए जाम में फसे वाहन व जाम लगाने के दौरान महिलाओं को समझाते हुए पुलिसकर्मी। फोटो : हरिभूमि



झज्जर। देवनगर में हुए जलभराव के बीच दीवार के साथ मिट्टी के कट्टे लगाते हुए लोग। फोटो : हरिभूमि

लगाया पड़ा है। उधर, देवनगर कॉलोनी में भी हालत ज्यादा खराब है। पानी का स्तर निरंतर बढ़ रहा है। जिसके कारण लोग परेशान है। यहां भी मकानों की दीवारों में दरारें आ गई हैं। दिनभर लोग पानी के बहाव को रोकने के लिए व्यवस्था करते हुए दिखाई दिए।

**बेरी हलके को आपदा ग्रस्त क्षेत्र घोषित करे सरकार : कादियान**

- प्रशासनिक स्तर पर जल निकासी की कोई खास व्यवस्था नहीं की जा रही

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

पिछले दिनों हुई तेज बरसात के कारण बेरी हलके में हुए जलभराव से हालात बिगड़ते जा रहे हैं। खेतों के अलावा रिहायशी क्षेत्रों में भी जलभराव हो गया है। स्थिति 1995 में आई बाढ़ जैसे बनने लगी है।

लेकिन प्रशासनिक स्तर पर जल निकासी की कोई खास व्यवस्था नहीं की जा रही है। लोगों को जलभराव से निपटने के लिए सरकार ने भगवान भरोसे छोड़ दिया है। यह बात कांग्रेस नेता विक्रम कादियान, आई बाढ़ जैसे बनने लगी है।

**जलभराव की चपेट में आया खुदाई का स्कूल**

बहादुरगढ़। खेतों के बाद अब खुदाई गांव का राजकीय उच्च विद्यालय भी बाढ़ के पानी की चपेट में आ गया है। बेशक रविवार तक स्कूलों की छुट्टियां घोषित हैं, लेकिन सोमवार को छात्रों के स्कूल में आने के बाद पढ़ाई में दिक्कत आने वाली है। सरपंच विनोद सहवाग ने स्कूल का निरीक्षण करते हुए जिला प्रशासन से जलनिकासी की मांग की है। गांव के इहरी क्षेत्र में मातन लिंक ड्रेन के ओवरफ्लो होने से करीब 5-6 फुट तक पानी भरा हुआ है। फसल पूरी तरह से नष्ट हो चुकी है। यह सब पिछले 7 दिनों से मातन लिंक ड्रेन की डिवाटरिंग बंद होने के कारण हुआ है। किसानों ने सरकार से बाढ़ राहत के तहत हर किसान को 50 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजा देने की मांग की है।



बहादुरगढ़। राजकीय स्कूल में भरा पानी दिखाते सरपंच व स्टॉफ सदस्य। फोटो: हरिभूमि

**बाढ़ प्रभावित इलाकों में बेजुबानों को किया रेस्क्यू**

- गोमाता-गौवंशों के लिए चारे की भी व्यवस्था की जा रही

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

बाढ़ और जलभराव से जूझ रहे बेजुबान जीवों को रेस्क्यू करने के लिए बहादुरगढ़ के गाइडियन ऑफ एंजल्स ट्रस्ट की टीम दिल्ली के मत्स्य विहार क्षेत्र में जुटी है। ट्रस्ट के संचालक हरिकृष्णन मांगले ने बताया कि यहां बाढ़ के पानी में फंसी गायों, कुत्तों, गोवंश और अन्य जीवों को निकालकर सुरक्षित स्थानों तक प्रभावित होते हैं, लेकिन अक्सर उनकी तरफ ध्यान नहीं जाता। समाज के हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह जीवों की रक्षा के लिए आगे आए।



बहादुरगढ़। जलभराव के बीच कुत्तों को रेस्क्यू करते हरिकृष्णन मांगले।



छारा में माइनर ट्रूटने से भरा पानी

अनुसार बेजुबान जीवों की रक्षा करना सबसे बड़ा पुण्य है। प्राकृतिक आपदाओं के समय जानवर भी प्रभावित होते हैं, लेकिन अक्सर उनकी तरफ ध्यान नहीं जाता। समाज के हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह जीवों की रक्षा के लिए आगे आए।

बहादुरगढ़। बरसात के चलते माइनर और ड्रेन ओवरफ्लो चल रही है। एक तरफ जहां शहरी क्षेत्र में मुगेशपुर ड्रेन ट्रूटने के कारण परेशानों बढ़ी हुई है तो अब दूसरी तरफ गांव छारा के पास माइनर ट्रूटने से खेतों में पानी भर गया। जैसे ही माइनर ट्रूटने और जलभराव की जानकारी वामीणों की मिली तो वे तुरंत मौके पर पहुंचे तथा अपने स्तर पर बचाव कार्य शुरू किया। प्रधान दीपक और वामीण ने शाम तक मरम्मत कार्य में जुटे हुए थे। जानकारी मिलते ही एसडीएम नसीब कुमार भी सी टीम सहित मौके पर पहुंचे। दीपक ने बताया कि माइनर के तटबंध लंबे समय से कमजोर थे। इस संबंध में सिंचाई विभाग से कई बार मरम्मत की मांग की गई, लेकिन अनदेखी के कारण माइनर ट्रूट गई। यह माइनर लकड़िया से शुरू होकर छारा से होते हुए झज्जर के खेड़ी मढ़ानी तक जाती है और पेजजल व सिंचाई के लिए उपयोग होती है।

**संस्था को आंतरिक शिकायत समिति गठित करना अनिवार्य**

**महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम अधिनियम 2013 के प्रावधानों की दी जानकारी**

- महिलाओं को सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण में कार्य करने का अधिकार

हरिभूमि न्यूज झज्जर

स्थानीय पुलिस लाइन परिसर में कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम अधिनियम 2013 के प्रावधानों की जानकारी देने के उद्देश्य से सेमिनार का आयोजन डीसीपी जसलीन कौर की अध्यक्षता में किया गया।

जिसमें विशेषज्ञ तपस्या बनर्जी ने विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह अधिनियम सरकारी और निजी सभी प्रकार के संगठनों, कार्यालयों, कारखानों, स्टेडियमों, शिक्षण संस्थानों तथा घरों में कार्यरत



झज्जर। महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम अधिनियम 2013 के प्रावधानों की दी जानकारी देते हुए विशेषज्ञ।

महिलाओं पर समान रूप से लागू होता है। अधिनियम के अंतर्गत प्रत्येक संस्था को आंतरिक शिकायत समिति गठित करना अनिवार्य है। जहां कार्यस्थल पर किसी भी प्रकार के यौन उत्पीड़न की

शिकायत दर्ज करवाई जा सकती है। डीसीपी जसलीन कौर ने बताया कि जिला पुलिस ने भी विशेष समिति गठित की हुई है। जिसमें एक आईपीएस अधिकारी, एसीपी, दो महिला थाना प्रबंधक, महिला सेप्टी सैल इंचार्ज तथा अधिवक्ता नीलम पंचाल शामिल हैं।

इस समिति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी महिला को यौन उत्पीड़न की स्थिति में समयबद्ध और निष्पक्ष समाधान मिले। उन्होंने कहा कि इस अधिनियम के अंतर्गत महिलाओं को यह अधिकार है कि वे सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण में कार्य करें तथा संस्था का दायित्व है कि वह इस वातावरण को बनाए रखे।

**आज लगेगा चंद्र ग्रहण, सूतक काल में मंदिरों के कपाट रहेंगे बंद: शर्मा**

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर



पंडित गुलशन शर्मा।

हिंदू धर्म में चंद्र ग्रहण बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। यह एक खगोलीय घटना है, जिसका धार्मिक महत्व भी अधिक है। भाद्रपद पूर्णिमा रविवार को साल का दूसरा व आखिरी चंद्र ग्रहण लगेगा। यह चंद्र ग्रहण भारत में पूर्ण रूप से नजर आएगा। भारत में दिखने के कारण इसका सूतक काल भी मान्य होगा। सूतक काल के समय मंदिरों के कपाट बंद रहेंगे और धार्मिक आयोजनों की मनाही होती है। पंडित गुलशन शर्मा ने बताया कि इस बार श्राद्ध पक्ष के पहले दिन चंद्र ग्रहण का संयोग बन रहा है, जिसके चलते पिंडदान, तर्पण आदि सूतक शुरू होने से पहले ही कर लें। उन्होंने बताया कि चंद्र ग्रहण का सूतक काल सात सितंबर को दोपहर 12:

**आज से शुरू होगा पितृपक्ष**

बहादुरगढ़। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा अर्थात रविवार 7 सितंबर से पितृपक्ष प्रारंभ होगा और आश्विन मास की अमावस्या अर्थात 21 सितंबर को इसकी समाप्ति होगी। ज्योतिषाचार्य एवं हस्तरेखा विशेषज्ञ अक्षिता अग्रो की अनुमति से हिंदू धर्म में पितृ पक्ष अपने पूर्वजों को याद करके का विशेष समय है। प्रतिपदा का श्राद्ध 8 सितंबर को होगा। जिस तिथि को व्यक्ति की मृत्यु होती है, उसी तिथि को उसका श्राद्ध किया जाता है। अगर किसी मृत व्यक्ति की तिथि ज्ञात न हो तो अमावस्या तिथि वाले दिन उनका श्राद्ध किया जाता है। इस दौरान पितरों का तर्पण, पिंडदान व श्राद्ध किया जाता है। मान्यता है कि इस दौरान हमारे पूर्वज धरती पर आते हैं। श्राद्ध करने से कुण्डली का पितृ दोष भी खत्म हो जाता है।

57 मिनट पर शुरू होगा। चंद्र ग्रहण रात 9:57 से 1:27 बजे तक रहेगा। दोपहर 12:57 के बाद सूतक से जुड़े सभी नियमों का पालन करना होगा।



झज्जर। प्रतियोगिता के दौरान उपस्थित डीसीपी जसलीन कौर एवं अन्य।

और उनमें टीम भावना को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि जल्द ही जिले में जॉन वाइज टीम बनाई जाएगी। जिन टीमों की प्रतियोगिता प्रामाण्य व शहरी क्षेत्र के खिलाड़ियों के साथ भी करवाई जाएगी ताकि युवाओं को खेल के महत्व और नशे के दुष्प्रभाव के बारे में जागरूक किया जा सके। इस दौरान एसीपी अखिल कुमार, एसीपी दिनेश कुमार, एसीपी अनिरुद्ध चौहान, एसीपी सुरेंद्र सिंह, पुलिस लाइन प्रबंधक विकास कुमार, स्पेशल स्टॉफ प्रभारी राजेश कुमार सहित अन्य भी मौजूद रहे।

**चौ. धीरपाल राजकीय महाविद्यालय में प्रतिभा खोज प्रतियोगिता**

**गायन में प्रिया, डांस में सरिता व फैशन शो में तमन्ना प्रथम**

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

बादली के चौ. धीरपाल राजकीय कालेज में प्रतिभा खोज प्रतियोगिता हुई। इस दौरान नृत्य, गीत, रंगोली, कविता वाचन, श्लोक उच्चारण, वीडियोग्राफी एवं फोटोग्राफी जैसी अनेक गतिविधियां हुईं। एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को दर्शाते हुए विद्यार्थियों ने फैशन शो के माध्यम से विभिन्न भारतीय राज्य की संस्कृति को प्रस्तुत किया। पेंटिंग में प्रथम तमन्ना, द्वितीय सुलानी और तृतीय वंशिका रही। बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट में प्रथम कोमल, द्वितीय तमन्ना और



बहादुरगढ़। प्रतिभा खोज प्रतियोगिता में भाग लेने वाली प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

तृतीय नितिका रही। पोस्टर में प्रथम युक्ता व प्रियंका, द्वितीय तमन्ना व नेहा और तृतीय प्रियंका व अमनिका रही। कोलॉज में प्रथम कोमल व नेहा, द्वितीय अमनिका और तृतीय प्रियंका व तमन्ना रही। वीडियोग्राफी में

**कविता पाठ में कोमल अखिल**

कविता पाठ में कोमल पहले, कीर्ति दूसरे व खुशी तीसरे नंबर पर रही। नृत्य में सरिता पहले, रवीना दूसरे, तनु व नितिका तीसरे नंबर पर रही। गुणु डांस में निधि, रचना पहले, श्रुतिक, देवेश द्वितीय और नितिका, प्रियंका तृतीय रही। फैशन शो में प्रथम तमन्ना, द्वितीय प्रियंका व श्लेषा तथा तृतीय नितिका व तनु रही।

प्रथम अरुण, द्वितीय नितिका व तृतीय कोमल रही। फोटोग्राफी में प्रथम नितिका, द्वितीय अरुण और तृतीय कोमल रही। स्टेज कंडक्टर में कोमल व प्रगति पहले नंबर पर रही। रंगोली बनाते में प्रियंका व तमन्ना पहले, वंशिका दूसरे व नितिका तीसरे नंबर पर रही। गायन में प्रिया प्रथम, इंद्रु द्वितीय व खुशी तृतीय रही।

**सबना**

में, सुरेंद्र सिंह पुत्र श्री समे सिंह निवासी मकान नं. 400, गांव बालीर, तहसील बहादुरगढ़, जिला झज्जर, हरियाणा-124507 बयान करता हूँ कि मेरा पुत्र मोहित व पुत्रवधु सोनिया मेरे कहने-सुनने से बाहर है। इसलिए मैं इनको अपनी चल्-अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूँ। इनसे लेना-देन व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार हूँ। मेरी व मेरे परिवार को कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

**खबर संक्षेप**



**साढ़े 9 किलो गांजे सहित तीन गिरफ्तार**

झज्जर/बहादुरगढ़। स्पेशल स्टाफ झज्जर की टीम ने बहादुरगढ़ इलाके में गांजे सहित तीन आरोपी पकड़े। आरोपियों से करीब साढ़े 9 किलो गांजा बरामद हुआ। तीनों के खिलाफ आसौदा थाने में केस दर्ज किया गया है। दरअसल, स्पेशल स्टाफ को सूचना थी कि रोहतक जिले के तीन युवक नशीला पदार्थ बेचते हैं। फिलहाल वे इसी मंशा से जाखोदा के निकट किसान चौक पर मौजूद हैं। इस पर टीम तुरंत वहां गई और आरोपियों को काबू किया। आरोपियों की पहचान जयपाल, गुलशन और मोहित के रूप में हुई। तीनों रोहतक जिले के गांवों से हैं। राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में उनको तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान उनके पास 9 किलो 528 ग्राम गांजा बरामद हुआ। आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

**डंपर चोरी करने के मामले में एक आरोपी गिरफ्तार**

झज्जर। पुलिस की एक टीम द्वारा ट्रैक्टर का डंपर चोरी करने मामले में कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस चौकी बेरी प्रभारी सतबीर ने बताया कि राजेंद्र निवासी बेरी की शिकायत पर मामला दर्ज किया गया था। मामले में कार्रवाई करते हुए एक आरोपी को पकड़ा गया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान हर्ष निवासी गांव निगाना जिला रोहतक के तौर पर की गई है। पकड़े गए आरोपी से चोरी किया गया ट्रैक्टर का डंपर और पांच हजार रूपए की नगदी बरामद की गई है।

**चाकू के बल पर रुपये छीने, केस दर्ज**



बहादुरगढ़। बालोर बाईपास के पास बीती रात को एक गाड़ी चालक के साथ लूटपाट की वारदात हो गई। बाइक सवार तीन शांतिर बदमाश चाकू तानकर उससे नकदी लेकर भाग गए। पुलिस ने मामले में जांच शुरू कर दी है। वारदात झज्जर के निवासी ललित के साथ हुई है। ललित का कहना है कि वह बहादुरगढ़ में बालोर बाईपास के निकट गाड़ी से गन्ना उतारकर वापस जा रहा था। जब कुछ दूर आगे बढ़ा तो रास्ते में बाइक सवार तीन युवकों ने रास्ता रोक लिया। वे नजदीक आए और चाकू के बल पर साढ़े 12 हजार रुपये छीनकर चंपत हो गए। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

**विसर्जन से पहले गणपति बप्पा मोरया की रही गूंज**

**पंडालों में 10 दिनों तक पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन, सुंदरकांड के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की बहार रही**



बहादुरगढ़। शनिवार को सारा शहर गणपति बप्पा मोरिया के नारों से गूंज उठा। बालक हितैषी सेवा समिति समेत अन्य संगठनों द्वारा आयोजित गणेश महोत्सव कार्यक्रम सुंदर झांकी एवं मूर्ति विसर्जन के साथ संपन्न हुए। मुख्यअतिथि के रूप में इनेलो नेत्री शीला नफे सिंह राठी ने गणपति पूजन किया। शहर में भव्य शोभायात्रा निकाली गई और भक्त मस्ती में झूमते दिखे। बता दें कि शहर के विभिन्न हिस्सों में बनाए गए पंडालों में 10 दिनों तक पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन, सुंदरकांड के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों की बहार रही। बालक हितैषी सेवा समिति के कार्यक्रम में इनेलो नेत्री शीला नफे सिंह राठी ने गणेश स्तुति की। इसके उपरांत शहर के विभिन्न मार्गों से निकली शोभा यात्रा में श्रद्धालु बैंड व डोल-नगाडों के साथ शालिल हुए। जगह-जगह पर लोगों ने पुष्प वर्षा करते हुए लंबोदर विघ्नहरण का स्वागत किया। इस अवसर पर



बहादुरगढ़। शनिवार को शोभायात्रा में मौजूद मनमोहक झांकियां। फोटो: हरिभूमि

**विधायक व पार्षद ने की पूजा**

बहादुरगढ़। मॉडल टाउन के रघुनाथ मंदिर में विराजमान गणेश जी की मूर्ति की शनिवार को विशेष पूजा की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विधायक राजेश जूल व पार्षद सचिन दलाल मौजूद रहे। मंदिर की परिक्रमा करते के उपरांत प्रतीमा को विसर्जन के लिए ले जाया गया। विसर्जन से पहले राजू पंडित द्वारा हवन व किया गया। मंदिर समिति द्वारा मंडारें का भी आयोजन किया। इस अवसर पर जुगल किशोर, गिरीश गुप्ता, आशोष, अरुण कुमार, प्रदीप भारद्वाज, मजोज, मनोष भारद्वाज, रविंद्र गुप्ता आदि मौजूद रहे।



गणपति की पूजा करती शीला राठी।

समिति के प्रचार मंत्री रविकांत भोसले, रोहित सैनी, सचिन सैनी, जोनी गुप्ता, नीरज शयोराण, अंकित शर्मा, नितिन शर्मा, लोकेश जांगडा, विशाल जरगर, अमन सैनी, अंकित रोहिल्ला, गौरव सैनी, कुलदीप सरदार, मोनु शर्मा, अनु वलिया, मयंक जैन, योगेश सैनी, कपिल राठी, तरुण सैनी, टिकू, राहुल सैनी सहित अन्य मौजूद रहे।

**गणपति बप्पा मोरया के जयघोष के साथ किया भगवान का विसर्जन**



झज्जर। विसर्जन से पूर्व गणपति बप्पा की पूजा अर्चना करते हुए श्रद्धालु।

झज्जर। अनंत चतुर्दशी के साथ ही गणेश उत्सव का समापन हो गया। पिछले दिनों गणेश चतुर्थी पर जिलावासियों द्वारा विधिवत रूप से की गई गणपति बप्पा की स्थापना के बाद उनकी दस दिनों तक पूजा-अर्चना की। शनिवार को श्रद्धालुओं द्वारा गाजे-बाजे के साथ कलाश यात्रा निकालते हुए अपने घरों व मंदिरों में स्थापित भगवान श्रीगणेश को विदा किया। शहर के अंबेडकर चौक स्थित मां जगदम्बा मंदिर के सेवक भारत महिवाल ने बताया कि उन्होंने अबकी बार मिट्टी से निर्मित गणपति बप्पा की प्रतिमा की स्थापना की थी। नियमित पूजा-अर्चना और अनुष्ठान के बाद आज विधि-विधान से उनका विसर्जन किया गया है। उन्होंने बताया कि गणपति बप्पा का विसर्जन बेरी के नजदीक एक नहर में करते हुए उनसे अगले वर्ष जल्दी आने की मन्तव्य मांगी। विसर्जन के दौरान श्रद्धालुओं ने गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ का जयघोष किया। मोहल्ले की महिलाओं ने मंगल गीत गाकर गणपति बप्पा को विदाई दी। श्रद्धालुओं ने बताया कि नहर में पानी का बहाव अधिक होने के चलते वे नहर किनारे नहीं गए। ऐसे में उन्होंने पुलिस पर खड़े होकर रस्सी की सहायता से गणपति बप्पा का विसर्जन किया। इस दौरान राजपाल, जय सिंह, अशोक कुमार, नरेश चांदोलिया, रवि, योगेश, मिहिर, पुष्कर, भास्कर, जसवंत, गीता, श्यामा, मधु, सरोज, सीमा, धर्मवती, सुशोला, माया, नीलम, पूरम, धर्म, गुलाबो, कुसुम, किरण, चंद्रवाल, बबिता, निर्मला, चंद्रो, सुमन, आशा, ओमवती, शांति, बाला सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

**चेयरपर्सन सरोज राठी का दावा : दिव्य नगर योजना से बदलेगी शहर की सूरत**

**बहादुरगढ़ में पहली बार बनेगा ड्रेनेज सिस्टम**

हरिभूमि न्यूज। बहादुरगढ़। मरम्मत, पुनर्निर्माण और नए नालों का निर्माण किया जाएगा। चेयरपर्सन ने बताया कि दिव्य नगर योजना के तहत ड्रेनेज के साथ ही शहर की खूबसूरती और सुविधाओं को आधुनिक बनाया जाएगा। करोड़ों रूपए की लागत से रेलवे रोड, मेन बाजार रोड, नजफगढ़ रोड, सेक्टर-9 व 9ए के डिवाइडिंग रोड और वेस्ट जुआं ड्रेन रोड समेत शहर की 7 प्रमुख सड़कों को मॉडर्न रूप दिया जाएगा। इन सड़कों पर साइकिल ट्रैक, पैदल यात्रियों के लिए चौड़े फुटपाथ, अत्याधुनिक स्ट्रीट लाइट सिस्टम और अन्य सुविधाएं विकसित की जाएंगी। पांच प्रमुख चौक-चौराहों का सौंदर्यकरण किया जाएगा। बहादुरगढ़ में पहली बार ओपन एयर थियेटर, आधुनिक लाइब्रेरी और ऑडिटरियम भी बनाए जाएंगे। वहीं, शहर के 70 से ज्यादा पार्कों में से चुनिंदा पार्कों को अल्ट्रा मॉडर्न पार्क के रूप में विकसित किया जाएगा।



चेयरपर्सन सरोज राठी का दावा : दिव्य नगर योजना से बदलेगी शहर की सूरत

**डीपीआर तैयार होगी**

शहर का विस्तृत सर्वे करने के साथ ही अगले तीन माह में डीपीआर तैयार होगी। इसके तहत शहर के 30 से ज्यादा नालों की

**बिजली कार्यालय से बाइक चोरी, केस**

बहादुरगढ़। शहर में वाहन चोरी की वारदात नहीं थम रही। अब बिजली निगम कार्यालय परिसर में चोरी की वारदात हो गई। वाहन मालिक ने पुलिस को शिकायत दे दी है। जोधी के निवासी प्रवेश का कहना है कि वह निगम कार्यालय में काम करता है। उसने अपनी बाइक परिसर में खड़ी की थी। शाम को देखा तो नहीं मिली। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया। इस शिकायत पर लाइनपर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

**भट्टी गेट में सड़क का लेवल ऊंचा करने का विरोध**

हरिभूमि न्यूज। झज्जर

भट्टी गेट में चौगाना माता मंदिर से बीकानेर चौक तक बनाए जाने वाली सड़क को नियमों के खिलाफ बनाए जाने का आरोप मौहल्लावासियों द्वारा लगाया गया है। इस संबंध में मौहल्लावासियों द्वारा डीएमसी व नगर परिषद चेयरमैन को भी शिकायत देकर समस्या से अवगत कराया है। मौहल्ला निवासी राकेश, रवि, नंद प्रकाश, विजय, सुभाष, कृष्णा, अनिल, रामनिवास, सुनील सैनी, श्रीनिवास आदि ने बताया कि उनके मोहल्ले में चौगाना माता चौक से बीकानेर चौक तक सड़क निर्माण कार्य कराया जा रहा है। ठेकेदार द्वारा अनाधिकृत रूप से रोड को करीब एक से दो फुट के बीच ऊंचा उठाया जा रहा है जो गलत है तथा नियमों के विरुद्ध है। उनके अनुसार रोड ऊंचा उठाने से भट्टी गेट चौक के साथ लगने वाली सभी गलियों नीची पड़ जाएगी। उन गलियों में घरों से निकलने वाला गंद पानी भी नहीं निकल पाएगा। बरसात के दिनों में तो जलभराव के कारण स्थिति और अधिक गंभीर हो जाएगी। कालोनीवासियों के अनुसार यहां स्थित शहीद रमेश कुमार मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के सामने बरसाती पानी भरा



झज्जर। भट्टी गेट में उखाड़ी गई सड़क और नाले की दीवार बनाते कर्मचारी।

रहता है। सड़क का लेवल ऊंचा उठने से यह बरसाती स्कूल के अंदर भरना शुरू हो जाएगा। जिसके बाद स्कूल की बिल्डिंग को ऊंचा उठाने में भी सरकार पर अतिरिक्त बोझ पड़ेगा। इसके अलावा सड़क का लेवल ऊंचा उठाने से जहां घर नीचे रह जाएंगे वहीं इससे पीछे वाली गलियों का लेवल नीचा रहने के कारण वहां पानी निकासी व्यवस्था ठप हो जाएगी। उन्होंने नप व जिला प्रशासन से समस्या का समाधान करने की गुहार लगाई है।

**स्वच्छ भारत मिशन के तहत मिले मात्र 13.46 करोड़**

बहादुरगढ़। स्वच्छ भारत मिशन अर्बन 2.0 के तहत हरियाणा के लिए 637.99 करोड़ रुपये की परियोजना को मंजूरी मिल चुकी है। इसमें से केंद्र सरकार को 246.68 करोड़ रुपये जारी करने हैं, लेकिन जून 2025 तक राज्य को केवल 13.46 करोड़ रुपये ही प्राप्त हुए हैं।

शहर के निवासी सतपाल हाडा के मुताबिक, उन्हें यह जानकारी भारत सरकार के शहरी एवं हाउसिंग विभाग द्वारा उपलब्ध कराई गई है। उन्होंने कहा कि इस योजना का उद्देश्य शहरी और कस्बों में स्वच्छता सुधारना, घरों व सार्वजनिक स्थलों पर शौचालयों का निर्माण, ठोस कचरे का वैज्ञानिक निस्तारण, खुले में शौच पर रोक और सालाना स्वच्छता सर्वेक्षण कराना है। लेकिन अपर्याप्त फंडिंग के चलते कई शहरों में अपेक्षित काम की रफ्तार धीमी पड़ी हुई है। बहादुरगढ़ सहित कई शहरी इलाकों में जलभराव और गंदगी की समस्या बनी हुई है। स्थानीय लोगों की लापरवाही भी बड़ी चुनौती है। नहरों और नालियों में कूड़ा डालने से पानी की निकासी बाधित हो रही है, जिससे बरसात के दिनों में कॉलोनीवासियों में डूब जाती है। यदि मंत्रालय समय पर आवंटित धनराशि जारी कर दे तो राज्य में स्वच्छता संबंधी ढांचगत सुविधाएं समय रहते बेहतर की जा सकती हैं। लेकिन इसमें ईमानदारी और संजीदगी की भी जरूरत है।

**दक्षलक्षण महापर्व के 10वें दिन जैन मंदिरों में हुई उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की पूजा**

बहादुरगढ़। दक्षलक्षण महापर्व के 10वें दिन शनिवार को उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म दिवस मनाया गया। श्रद्धालुओं ने तीर्थंकर श्री वासु पुष्प भगवान मोक्ष कल्याणक पूजन किया। श्रीजी का अभिषेक व शांतिधारा की। शहर के जटवाड़ा मोहल्ला में स्थित श्री पद्म प्रभु दिगम्बर जैन मंदिर, अग्रवाल कॉलोनी स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, संत कॉलोनी जैन मंदिर व अनाजमंडी स्थित पांडूशिला पर हुए कार्यक्रम में जैन अनुयायियों ने पूरे विधान के साथ पूजा अर्चना की।



बहादुरगढ़। मंदिर में उत्तम ब्रह्मचर्य दिवस पर पूजा अर्चना करते जैन धर्मावलंबी।

श्री दिगम्बर जैन समाज बहादुरगढ़ के संरक्षक मदन सैन जैन, पवन कुमार जैन, आनंद प्रकाश जैन, प्रधान राकेश जैन, महासचिव अरविंद जैन, उप प्रधान नरेंद्र जैन,

कोषाध्यक्ष दीपक जैन, महासचिव संयोजक तरसेम जैन, संजय जैन, सलाहकार अमार्शु जैन, सौरभ जैन, प्रचार मंत्री बिजेंद्र जैन, प्रचार मंत्री पवन जैन, भंडारी नवीन जैन, राजीव जैन, सुधीर जैन, मुनीष जैन के अलावा पांडूशिला समिति प्रधान सुनील जैन, रतन जैन, विजय जैन, नितिन जैन, उप प्रधान नरेंद्र जैन, समाज से जुड़े लोगों ने पूजा अर्चना की। अरविंद जैन ने बताया कि रविवार 7 सितंबर को पूर्णिमा के दिन वार्षिक स्थथात्रा एवं क्षमावाणी महोत्सव का आयोजन धूमधाम से होगा। जैन मंदिर में 1008 श्री पदम प्रभु भगवान पंच कल्याणक विधान का भव्य संगीतमय आयोजन पंडित संदीप शास्त्री व पंडित विवेक शास्त्री द्वारा होगा।

**फौजी के साथ की घोखाधड़ी : दो युवक चार मोबाइल व पर्स लेकर चंपत**

बहादुरगढ़। आर्मी के जवान के साथ बहादुरगढ़ में घोखाधड़ी की वारदात हो गई। दो शांतिर युवकों ने फौजी को बातों में उलझाया और उससे चार मोबाइल तथा पर्स लेकर चंपत हो गए। पंडित फौजी की शिकायत पर सिटी थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वारदात दीपक के साथ हुई है। दीपक का कहना है कि शुक्रवार की देर शाम को वह बहादुरगढ़ में पुराने बस अड्डे पर उतरा था। इस दौरान दो शांतिर युवक आए और उसके साथ बातचीत करने लगे। जब वह एटीएम में गया तो दोनों वहां तक उसके साथ गए और उसका एटीएम पिन देख लिया। वह दोबातों में स्टेशन के नीचे आया तो दोनों फिर से उसके पास आ गए। शांतिरों ने उसको इस कुछ बातों में उलझाया कि कुछ समझ नहीं पाया और उससे चार फोन ले तथा पर्स ले लिए। जब तक वह कुछ समझ पाता, शांतिर भाग चुके थे। फिर उसने पुलिस को सूचना दी।

**हरिभूमि आवश्यक सूचना**  
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर संपर्क करें या व्हाट्सअप करें :-  
**बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, गणपति ट्रेवल्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़**  
**झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर**  
**फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005**

**मृत्यु अंत नहीं है**  
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है आत्मा पथ प्रदर्शक है।  
**हरिभूमि**  
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक  
इस शोभाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।  
**तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश**  
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से  
साईज संस्करण विशेष छूट राशि  
5 × 8 से.मी स्थानीय संस्करण के ८. 2500/-  
10 × 8 से.मी अन्तर के पृष्ठ पर ८. 3000/-  
+5% GST Extra  
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त टाईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कोई दर लागू।  
**अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें**  
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400  
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रेवल्स के ऊपर, 8295852900

**जलभराव की स्थिति को लेकर स्वास्थ्य विभाग अलर्ट मोड़ पर**

बीमारियों का खतरा, रैपिड रिस्पांस के लिए 183 टीमों का किया गठन

हरिभूमि न्यूज। झज्जर

जिले में लगातार हो रही बारिश और जगह-जगह जलभराव की स्थिति को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह से अलर्ट मोड़ पर है। जल एवं मच्छर जनित बीमारियों के फैलने की आशंका को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने व्यापक स्तर पर तैयारियां कर ली हैं। सिविल सर्जन डॉक्टर जयमाला ने बताया कि विभाग द्वारा जिले में न केवल प्रत्येक स्वास्थ्य केंद्र पर रैपिड रिस्पांस टीम का गठन कर दिया गया है बल्कि सभी स्वास्थ्य संस्थानों में आवश्यक दवाओं की पर्याप्त उपलब्धता भी सुनिश्चित की गई है। स्वास्थ्य विभाग की 183 टीमों प्रतिदिन गांवों और शहरी वार्डों में जाकर मच्छररोधी गतिविधियां, पानी की क्लोरीनेशन जांच और बीमारियों से बचाव के संदेश आमजन तक पहुंचा रही हैं। पानी को बैक्टीरियोलॉजिकल जांच के लिए बहादुरगढ़ के सरकारी अस्पताल में प्रयोगशाला सुचारू रूप से कार्य कर रही है। जिला निगरानी टीम द्वारा ओपीडी में आने वाले जलजनित व मच्छर जनित बीमारियों के मामलों की आईएचआईपी पोर्टल पर दैनिक समीक्षा की जा रही है। मलेरिया, डेंगू, हेपेटाइटिस ए और ई जैसे मरीज मिलते ही संबंधित क्षेत्र की टीम मौके पर जाकर उपचार, सर्वे और रोकथाम की कार्यवाही करती है। जिले में मलेरिया, डेंगू, हेपेटाइटिस ए व ई, स्क्रब टाइफस, लेप्टोस्पायरोसिस और टाइफाइड जैसी बीमारियों की जांच की सुविधा उपलब्ध है। स्वास्थ्य विभाग की टीमों जलभराव वाले क्षेत्रों का दौरा कर हालात की लगातार समीक्षा कर रही है। प्रभावित



झज्जर। घरों में पानी की जांच करते हुए स्वास्थ्यकर्मी

क्षेत्रों में मलेरिया व डेंगू की रोकथाम के लिए जलभराव पर काले तेल का छिड़काव तथा पंचायती राज संस्थाओं और नगर परिषद के सहयोग से फॉगिंग की कार्यवाही की जा रही है। सिविल सर्जन डॉक्टर जयमाला ने आमजन से अपील की है कि वे घरों और आसपास पानी इकट्ठा न होने दें। मच्छरों से बचाव के उपाय अपनाएं, साफ पानी ही पीएं और बीमारी के लक्षण दिखते ही नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र से संपर्क करें।

**आसौदा में तालाब में डूबने से युवक की मौत दूसरा पीजीआई रेफर, जांच में जुटी पुलिस**

हरिभूमि न्यूज। बहादुरगढ़

गांव आसौदा स्थित एक धार्मिक स्थल परिसर में बने तालाब में अलग-अलग समय में दो युवक डूब गए। इनमें से एक युवक की मौत हो गई, जबकि दूसरा पीजीआई रोहतक में उपचारधीन है। मामले में पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पहला हादसा शनिवार की सुबह हुआ। जानकारी के अनुसार, बराही का निवासी सुदर्शन अपने कुछ दोस्तों के साथ आसौदा स्थित एक धार्मिक स्थल पर गया हुआ था। वहां परिसर में बने तालाब में उसने कूड़ा फेंका और तालाब में डूबने लगा तो साथी लड़कों ने शोर मचाया। संयोगवश कुछ पहलवान नजदीक ही अभ्यास कर रहे थे। शोर सुनकर वे तुरंत मौके पर आए और सुदर्शन को जोहड़ से बाहर निकाला। आनन फानन में उसे नागरिक अस्पताल में लाया गया। जहां से पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया गया। वहीं, दोपहर को भी यहां एक हादसा हो गया। लाइनपर का निवासी करीब 18 वर्षीय वरुण



हादसे से गांव में शोक का माहौल

तालाब में डूब गया। जब तक उसे निकाला जाता, देर हो चुकी थी। नागरिक अस्पताल में लेकर आए तो मृत घोषित कर दिया गया। सूचना पाकर आसौदा थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। परिजनों के बयान लेकर मामले में आवश्यक कार्यवाही शुरू की। हादसे में गांव में मातम पसर रहा।

**संदिग्ध परिस्थितियों में दो किशोर लापता**

बहादुरगढ़। शहर की एक कॉलोनी से संदिग्ध परिस्थितियों में दो किशोर लापता हो गए। काफी तलाश के बाद भी नहीं मिले तो परिजनों ने पुलिस को सूचना देकर तलाश की गुहार लगाई है। पुलिस ने बच्चों की तलाश शुरू कर दी है। नेपाल मूल के प्रकाश का कहना है कि वह यहां छोटराम पार्क में रहता है। शुक्रवार को उसका 14 वर्षीय बेटा बादल अपने 12 वर्षीय दोस्त ललित के साथ गली में खेल रहा था। इसी दौरान अचानक लापता हो गया। काफी देर तक दोनों नजर नहीं आए तो उनकी तलाश शुरू की। तब से लेकर अब तक उन्हें तमाम संभावित ठिकानों पर ढूंड चुके हैं लेकिन कुछ पता नहीं चला। उधर, मामले की सूचना पर पुलिस भी गंभीर है। पुलिस ने केस दर्ज कर बालकों की तलाश शुरू कर दी है।

**Happy Birth Day**  
**कायरा गरेवाल**  
को जन्मदिन पर परिवार की तरफ से शुभकामनाएं

## जब कोई अपना हो परेशान-तनावग्रस्त कुछ देर रहने दें उसे अपने मन के साथ

हम सभी के जीवन में परेशानियाँ और तनाव के क्षण आते रहते हैं। ऐसे में कुछ लोग दूसरों से सलाह लेने में असहज महसूस करते हैं, वे नहीं चाहते कि उनसे कोई सवाल पूछा जाए। वे कुछ समय तक अपने मन के साथ एकांत रहना चाहते हैं। इस कंडीशन में हमें अपने अजीब की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए।

हरदम कुछ पछूते रहने के बर्ताव पर लगाम लगाने की जरूरत को रेखांकित करती हैं। समझना आवश्यक है कि उलझाऊ हालातों में, क्या चल रहा है? कैसा चल रहा है? कैसे हो? खुश क्यों नहीं दिखते हो? या टेंशनफ्री होने-रहने का प्रयास करो। जैसी सलाहों और सवालों का दोहराव हमारे दिमाग की मुश्किलों को और बढ़ा देता है। पहले से ही तकलीफ के घेरे में आए मन को और पीड़ा देने लगता है। उदाहरण के तौर पर जूझते युवा और संशुद्ध हो जाते हैं। अपने ही जीवन की दिशा को लेकर घबरेने वाली ये शंकाएं-आशंकाएं और भटकने वाली साबित होती हैं। साथ ही मन में आक्रोश भी उपजने लगता है, कभी खुद के प्रति तो कभी उन अपनों-परायों को लेकर, जो बिना मांगी सलाह देते हैं। हर समय सवाल पूछते हैं। सही गाइडेंस की जरूरत बताते हुए पहले से ही उलझे-बिखरे दिलो-दिमाग को और भटकाते हैं। ऐसे दौर में किसी भी इंसान को थोड़ा समय देना सही रहता है। समस्याओं से जूझ रहा इंसान चाहता है कि कोई बेवजह सवाल ना पूछे। आते-जाते तसल्ली ना दे। बात-बात में कोई नसीहत कोई राय ना मिले। ऐसी बातें और बर्ताव मददगार बनने के बजाय मनोभावों को और उलझाते हैं।

बताना चाहते। ऐसी परिस्थितियों में कोई गाइडलाइन देने के बजाय गंभीरता से उनकी मन-स्थिति को समझना एक अच्छा तरीका है। बेहतर महसूस करने के बाद वे स्वयं आपसे अपनी बात साझा करने की सोचेंगे। अगर नहीं तो यह उनका अधिकार है कि वे कितना और क्या दूसरों को बताना चाहते हैं? युवा पीढ़ी अपने निजी जीवन में दूसरों की ताक-झांक को ज्यादा पसंद नहीं करती। ऐसे में समझना आवश्यक है कि आपका संवाद



एकतरफा तो नहीं। आपके सवाल बहुत अधिक पर्सनल हुए तो अगले इंसान को असहज ही करेगा। साथ ही बिना मांगी सलाह भी दूसरे के लिए भार और तनाव का कारण बन सकती है।

### समझें तनावग्रस्त व्यक्ति की मनोदशा

आज के दौर में अधिकांश लोग जो कुछ भी अपनों-परायों, परिचितों-अपरिचितों से साझा करना चाहते हैं, वह वर्चुअल दुनिया में मौजूद होता है। ऐसे में निजी समस्याओं को खुद तक रखकर अपनी प्राइवसी चाहने वालों को परेशान करना सही नहीं होता है। देखा जाए तो कई बार निजी संबंधों में दूरियां आने की बड़ी वजह जरूरत से अधिक ऐसी दखलंदाजी भी होती है। ठीक जस्टिन की तरह ही किसी को यह कहना कि 'मेरी तरह रहे, मेरे जैसे बने या इस हाल में यह करो, वह करो।' किसी भी व्यक्ति, खासकर युवाओं को नहीं भाता। ऐसा व्यवहार जीवन में दूरियां और मन में शिकायतें बढ़ाता है। खासकर जब यह पता ही ना हो कि अगला इंसान किन हालातों से जूझ रहा है। कुछ बातों पर गौर करते हुए उसकी मनोदशा को समझना का प्रयास करना उचित है। आपसे जुड़ा इंसान अगर आई कॉन्टैक्ट किए बिना बात करे, आते-जाते बचकर निकलने की सोचे, पछने पर कुछ भी स्पष्ट कहने से बचे या शब्दों को घुमा-फिराकर अपनी बात रखे तो समझ जाइए कि वह अपनी परिस्थिति और मन-स्थिति को बताने में सहज नहीं है। कुछ समय के लिए ऐसे लोगों को उनके हाल पर छोड़ देना चाहिए। उनके दिलो-दिमाग को रिकवर होने का वक्त मिलना ही चाहिए। आगे सही समय देखकर उनके साथ संवाद की राह बनानी चाहिए। \*



### कवर स्टोरी

डॉ. मोनिका शर्मा

बी ते दिनों मशहूर कैनेडियन सिंगर जस्टिन बीबर ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट इंस्टाग्राम पर खुलासा किया कि वह टूट चुके हैं। गुस्से की समस्या से जूझ रहे हैं। जस्टिन ने अपनी मानसिक सेहत को लेकर भी चिंता जताई। दुनिया भर में मशहूर इस सिंगर ने अपनी पोस्ट में लिखा कि 'लोग मुझे ठीक होने के लिए कहते रहते हैं। क्या आपको नहीं लगता कि अगर मैं खुद को ठीक कर सकता, तो मैं पहले ही कर चुका होता? मुझे पता है कि मैं टूट चुका हूँ। मुझे पता है कि मुझे गुस्से की समस्या है। मैंने अपनी पूरी जिंदगी उन लोगों की तरह बने की कोशिश की, जो मुझे कहते रहे कि मुझे उनके जैसा ठीक होना चाहिए। यही बात मुझे और ज्यादा थका देती है, ज्यादा गुस्सा दिलाती है।' अपनी एक दूसरी पोस्ट में जस्टिन यह भी कह चुके हैं कि 'मुझे यह पूछना बंद करो कि मैं ठीक हूँ या नहीं। मुझे यह पूछना भी बंद करो कि मैं कैसा हूँ? क्या कर रहा हूँ? मैं जानता हूँ कि हम सभी के लिए जीवन कठिन है। आइए हम अपने लोगों को प्रोत्साहित करें, न कि अपनी सुरक्षाओं को एक-दूसरे पर प्रोजेक्ट करें। हर बार आपकी चिंता देखभाल के रूप में सामने नहीं आती है। यह सिर्फ अजीब रूप से ऑप्रेसिव यानी चिंता और तकलीफ थोपने वाली भी हो सकती है।'

### उचित नहीं ज्यादा सवाल-सलाह

असल में जस्टिन के विचार आम लोगों के लिए भी सार्थक सलाह लिए हैं। इस युवा और चर्चित चेहरे की बातें किसी अपने-पराए के जीवन में आई हेरान-परेषान करने वाली परिस्थितियों में

### इमोशंस / अंतरा पटल

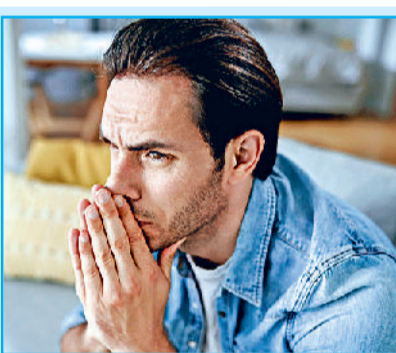
कई लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें आसानी से रोना नहीं आता है। उनके किसी रिलेटिव या करीबी की डेथ हो जाए तब भी नहीं रोते। जब उनका कहीं अपमान हो जाए या उन्हें गहरा सदमा लगे या कोई गंभीर नुकसान हो जाए वे तब भी नहीं रोते। जिन अवसरों जैसे-अंतिम संस्कार, विदाई या भावनात्मक फिल्म देखते हुए, जब अधिकतर लोग रोते हैं, उन पर भी उनके आंसू नहीं छलकते। हालांकि उनकी आंखों में आंसू होते हैं, लेकिन वो आंखों से छलकते नहीं। तो क्या इससे यह साबित होता है वे भावनाशून्य इंसान होते हैं? शायद ऐसे ही कठोर या कर्हें मजबूत मन वाले लोगों के लिए सुदर्शन फाकिर ने यह शेर कहा है, 'आप कहते थे कि रोने से न बदलेंगे नसीब/उम्र भर आपकी इस बात ने रोने न दिया।' इनसे उलट कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो अपनी भावनाओं को, आंसुओं को छिपाते नहीं हैं। जैसे एक बार टैनिस स्टार अमांडा अनिसिमोवा

आमतौर पर आंसू बहाने को कमजोरी की निशानी और न रोने वाले को कठोर हृदयी मान लिया जाता है। लेकिन वास्तव में आंसू केवल मन की अमिष्यवित होते हैं, जो कई बार हमारे मन का उपचार भी करते हैं।

## आंसुओं से बयां होती है मन की सच्ची हकीकत

विंबलडन फाइनल में हारने के बाद सबसे सामने फूट-फूट कर रो पड़ी थीं। सैंकड़ों लोगों और कैमरों के जरिए पूरी दुनिया के सामने भी उन्होंने अपने आंसुओं को रोकने का प्रयास नहीं किया और न ही चेहरे पर दिखावटी मुस्कान लाने की कोई कोशिश की थी। कुछ लोगों को उनका ऐसे रोना, अजीब या कर्हें अनुचित लगा। लेकिन वास्तव में देखा जाए तो अमांडा के रोने में सच्चाई

थी और बहादुरी भी। वास्तव में सबसे सामने रोने वालों और न रोने वालों को लेकर समाज में अलग-अलग तरह की राय रखी जाती है। मानते हैं कमजोरी का लक्षण: आमतौर पर रोने को, कमजोरी या अत्यधिक भावुकता या नियंत्रण के खोने से जोड़ते हैं। विशेषकर पुरुषों के संदर्भ में कहा जाता है कि 'मर्द रोते नहीं हैं।' बचपन में जब कोई लड़का रोता है तो उससे कहा जाता है,



'लड़कियों की तरह रोना बंद करो।' रोने को लड़कियों का एक्सक्लूसिव गुण मान लिया गया है। ऐसे जुमले केवल लड़कों या पुरुषों को नीचा दिखाने के लिए ही नहीं बल्कि लड़कियों या स्त्रियों का भी अपमान है। घर और स्कूल में बच्चों की इस सोच के साथ परवरिश की जाती है कि संयम (या बर्दाश्त) का अर्थ ताकत है और आंसू बहाना, कमजोरी या अस्थिरता की निशानी है।

गम-खुशी में छलकते हैं आंसू: वास्तव में रोना हमारी सोच और धारणा से कर्हें अधिक जटिल है। यकीनन दुःख (जो किसी के निधन पर होता है) रोने का सबसे आम कारण है। लेकिन लोग कुंठा, पीड़ा, असफलता या भयंकर अपमान के कारण भी रोते हैं। इसी के साथ खुशी के आंसुओं को कैसे अनदेखा किया जा सकता है? शतरंज का विश्व कप (महिला) जीतने के बाद दिव्या देशमुख खुशी से रो पड़ी थीं। हालांकि वह जब पिछली प्रतियोगिता में हार गई थीं, तब नहीं रोई थीं, लेकिन विजयी होने पर रोईं। अक्सर राहत, बड़ी सफलता, अत्यधिक खुशी भी दुःख जितना ही हमें भाव-विभोर कर देती है। बड़े-बड़े नेता, कलाकार, खिलाड़ी सार्वजनिक मंच पर रो पड़ते हैं। असम के बाद पीड़ितों का हाल सुनाते हुए हेम बरुआ संसद में रोए थे। अपनी फेयरवेल स्पीच देते हुए क्रिकेटर राहुल द्रविड रोए थे। आंसुओं ने इन लोगों को छोटा नहीं कर दिया। आंसुओं ने उन्हें अधिक संवेदनशील मनुष्य और भावनाओं से जुड़ा हुआ साबित किया।

मन का उपचार करे आंसू: रोना दवा की तरह भी काम करता है। बड़े-बुजुर्ग कहते हैं कि रोने से गम हल्का हो जाता है। चिकित्सा विज्ञान भी यही कहता है, भावनात्मक आंसुओं में स्ट्रेस हॉर्मोन होते हैं। रोने से तनाव कम हो जाता है, नर्वस सिस्टम को आराम मिलता है और राहत का अहसास होता है। इसलिए लोग कहते हैं, 'रोने के बाद हल्का महसूस हो रहा है।' जापान में तो रोने के लिए क्लब भी बने हैं, जहां लोग साथ रोने के लिए एकत्र होते हैं। इस प्रथा को 'रू-कत्सु' (आंसुओं की लालाश) कहते हैं। कहने का सार है कि हमें आंसुओं को कमजोरी की निशानी के तौर पर नहीं देखना चाहिए कि व्यक्ति ने अपने ऊपर का नियंत्रण खो दिया है। बल्कि यह समझना चाहिए कि आंसू व्यक्ति की सच्ची अभिव्यक्ति है। आज जब हम सब दिखावे के युग में जी रहे हैं, बनावटी सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर। ऐसे संसार में सच्चे आंसू ही इंसान की सच्ची अभिव्यक्ति है, जो साबित करते हैं कि हम इंसान हैं। \*

### गीत / कृष्ण बिहारी

## क्या लिखोगे



देवता बनकर दिखोगे, क्या लिखोगे?  
देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?  
सादगी से पूर्ण रचना एक भी तो जन नहीं पाए,  
सय करूं तो आदमी भी इसलिए तुम बन नहीं पाए।  
खोजकर अमृत पियोगे, क्या लिखोगे?  
देवता बनकर दिखोगे, क्या लिखोगे?  
जो अर्धनिष्क एक घातक विष पिएगा वह रवेगा,  
छटपटाई गौत मरकर जो जिएगा वह बवेगा।  
तुम शहीदाना प्रियोगे, क्या लिखोगे?  
देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?  
करो कागजों पर तुमने बस थिडिया उड़ाई है,  
अबतलक समझे नहीं यह भी कि झूठी कमाई है।  
रदियों जैसे बिकोगे, क्या लिखोगे?  
देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?

देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?

देवता बनकर लिखोगे, क्या लिखोगे?

### व्यंग्य

केदार शर्मा

वैश्विक स्तर पर भारत डेटा उपयोग में दुनिया का नंबर एक देश बना हुआ है, यह समाचार अखबार में पढ़कर गर्व से मस्तक ऊंचा हो गया। दरअसल डेटा, स्क्रीन पर चलने वाली समस्त गतिविधियों का ईंधन है। अगर डेटा न हो तो स्क्रीन की हालत धोबी के कुत्ते जैसी हो जाए, जो न घर का रहता, न घाट का। इस समय डेटा का थोक में उपयोग सबसे लोकप्रिय गतिविधि रील बनाने और देखने में भरपूर हो रहा है। धीरे-धीरे ऐसे लोगों की संख्या में इजाफा होता जा रहा है, जिनके लिए रील अगर शमा है, तो वे उसके परवाने हैं। रील ही इनका धर्म, कर्म और मर्म है, जान है, मान है और सम्मान है। जिनका श्रम, समय और डेटा, सब कुछ रीलों पर कुर्बान है। सुबह बिस्तर से उठने से लेकर रात को सोने तक ये रील-रानी के संग ही उठते-बैठते हैं। कई बार तो हैरतअंगेज रीलों देखकर दांतों तले अंगुली दब जाती है। प्री-वेडिंग शूटिंग में वर-वधु के बकरा-बकरी की आवाज निकाल कर उनके पोज में एक-दूसरे को प्रपोज करने हुए, क्लास रूम में डांस करती शिक्षिका की, गधे पर उल्टा बैठकर वीडियो वाली टाइप, एक से बढ़कर

धीरे-धीरे ऐसे लोगों की संख्या में इजाफा होता जा रहा है, जिनके लिए रील अगर शमा है, तो वे उसके परवाने हैं। रील ही इनका धर्म, कर्म और मर्म है, जान है, मान है और सम्मान है। जिनका श्रम, समय और डेटा, सब कुछ रीलों पर कुर्बान है।

### रील की झील में डूबते लोग



एक अनगिनत रीलों इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब और फेसबुक के आकाश में बेरोक-टोक पतंगों की तरह मंडरा रही हैं। अभिव्यक्ति की बेलगाम, बेकाबू असीम और स्वच्छंद आजादी के एक साथ यहां दर्शन होते हैं। इनमें से ही कुछ लोग रील देखते-देखते रील बनाने में उस्ताद बन गए हैं। वे ही इनके प्रोड्यूसर हैं और वे ही कैमरामैन। खत

माया के दर्शन कराने और कमर लचकाने की। रीलों ने हर हाथ और हर आंख को काम धमा रखा है। अगर कोई रील खूब वायरल हो गई, तो कमाई भी बल्ले-बल्ले होती है। रीलों की इस दुनिया के आगे 'रीयल' दुनिया फीकी, नीरस और बेमजा लगने लगी है। संस्कारों की दुनिया में भले ही मंदी हो, पर रीलों के सितारों पर बुलंदी है। संस्कारों की थाली भले ही खाली हो, पर रीलों की थाली नित नए मसालेदार 'व्यंजनों' से मालामाल है।

यह कहना बहुत मुश्किल है कि रील को हम बना रहे हैं या रील हमें बना रही है। रील को हम चला रहे हैं या रील हमें चला रही है। एक बार बिना सेंसर की इस गाड़ी में बैठने के बाद दलान पर लुढ़काती हुईं हमें कहाँ ले जाकर छोड़ेगी, भगवान ही मालिक है। कर्हें हम रील युग में तो प्रवेश नहीं कर रहे हैं? कुछ भी हो बिना विवेक का इस्तेमाल किए इसमें सफर करने की लत लग गई तो गत का बिगड़ना सुनिश्चित है। रील की इस झील में जो एक बार डूबता है तो बस डूबता ही चला जाता है। रील देखने और बनाने की दीवानगी इस कदर हर उम्र और वर्ग के लोगों पर हावी है कि जैसे उन्हें अपने आस-पास किसी की सुध-बुध ही नहीं रहती, जैसे उनका पूरा अस्तित्व स्मार्टफोन के तल पर टिका गया है। \*

### पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

#### निर्बंध-उदात्त प्रेम कविताएं

तसलीमा नसरिन जो भी लिखती हैं, जो निर्बंध, भयमुक्त और विचारों का नया आयाम खोलने वाली हैं। हाल में छपकर आई उनकी प्रेम कविताओं के अनुवाद की किताब 'यदि प्यार करो' में भी उनकी लेखनी का वही तेवर देख सकते हैं। वे प्रेम को मन की गहनतम अनुभूति मानती हैं, और इन्हें अभिव्यक्त करने से परहेज नहीं करती हैं। 'जब मेरे साथ तुम नहीं होते/मेरे साथ तब तुम सबसे ज्यादा रहते हो।' और 'तुम्हें देखने पर/मन करता है, शुरू से/शुरुआत करूं जीवन की।' जैसी भावप्रवण पंक्तियों के साथ ही वे इसकी जटिलता को भी बयां करती हैं 'कौन कहता है प्रेम/फिर चाहो और हो जाय'। \*

पुस्तक: यदि प्यार करो, लेखिका: तसलीमा नसरिन, अनुवाद: कल्लोल चक्रवर्ती, मूल्य: 199 रुपये, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

**अगर आपकी है  
रचनात्मक लेखन में रुचि**

अगर आप अपने आस-पास की बदलती दुनिया पर नजर रखते हैं। आप हटकर सोचते हैं, आपके भीतर विवेक और लेखन की क्षमता है, आप पत्रकारिता-लेखन के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो जुड़िए दैनिक हरिभूमि से। हमें दिल्ली में अपने **फीचर विभाग** के लिए आवश्यकता है-

► वरिष्ठ उप संपादक / उप संपादक  
► हिंदी टाइपिंग में कुशल ऑपरेटर  
► प्रशिक्षु उप संपादक  
► भी आवेदन कर सकते हैं।

रथाशीघ्र अपना बायोडाटा मेल करें-  
E-Mail: haribhoomifeaturedep@gmail.com

हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश से एक साथ प्रकाशित



अगर आप घूमने-फिरने के शौकीन हैं, साथ ही रोमांचक और साहसिक गतिविधियों में भी आपकी रुचि है, तो वाइल्डरनेस टूर यानी रोमांचक-साहसी पर्यटन, आपके लिए परफेक्ट ट्रेवल-चॉइस हो सकती है। हाल के वर्षों में इसका ट्रेंड काफी बढ़ रहा है। इस ट्रेंड और इसके फायदों पर एक नजर।

## एज्वॉयमेंट-थेरेपी का कॉम्बो एडवेंचर ट्रेवलिंग का बढ़ता क्रेज

ट्रेवल ट्रेंड / अंशु सिंह

पर्यटकों की बदलती पसंद को देखते हुए ट्रेवल इंडस्ट्री में नित नए बदलाव होते रहते हैं। अब लोग सिर्फ घूमने-फिरने के लिए यात्रा नहीं कर रहे, बल्कि उन यात्राओं पर जाना पसंद कर रहे हैं जिसमें रोमांच के साथ थोड़ी मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है। यही वजह है कि इन दिनों ट्रेवल थेरेपी के तौर पर वाइल्डरनेस टूर को लोग प्राथमिकता दे रहे हैं। ट्रेवल कंपनियों भी ऐसे ट्रेवलर्स की जरूरतों का ध्यान रखते हुए साहसिक टूर पैकेज डिजाइन कर रही हैं।

**ट्रेवलिंग का नया तरीका:** जरूरी नहीं कि हर किसी को पहाड़ों पर चढ़ना, बर्फ पर स्केटिंग करना या मानसून के दौरान घने जंगलों में ट्रेकिंग करना पसंद हो। लेकिन इन दिनों ऐसी साहसिक यात्राओं को लेकर लोगों की खास दिलचस्पी देखी जा रही है। टूर एंड ट्रेवल से जुड़ी कई कंपनियां भी इस तरह के वाइल्डरनेस टूर (साहसिक यात्रा) पैकेज उपलब्ध करा रही हैं। वाइल्डरनेस टूर के दौरान टूरिस्ट को कुछ दिन या हफ्ते भर के लिए उजाड़ और बंजर इलाके में अकेले छोड़ दिया जाता है। वहां से वे खुद ही रास्ता ढूँढते हैं और बाहर निकलते हैं। टूरिस्ट वाइल्डरनेस टूर के लिए अपनी पसंद से देश या स्थान का चयन करते हैं, जैसे- कोई जंगल, रेगिस्तान, पहाड़ या ध्रुवीय इलाका आदि। पूरी दुनिया में इन दिनों ऐसी यात्राएं हो रही हैं। इनमें मंगोलिया, पेरू और आर्कटिक महासागर में नौवें का द्वीप समूह स्वालबार्ड जैसे एडवेंचरस डेस्टिनेशन शामिल हैं।



कई डेस्टिनेशंस हैं मौजूद: हालांकि प्रतिकूल मौसम और दुर्गम स्थान संबंधी कारणों से आम पर्यटक इनसे बचते हैं। फिर भी एडवेंचर के शौकीन लोग इस तरह की साहसिक यात्राओं का लुप्त जरूर उठाते हैं। अपने देश में वाइल्डरनेस टूर के इच्छुक पर्यटकों के लिए अनेक ट्रेवल डेस्टिनेशंस मौजूद हैं। वे हिमालय की तलहटी में बसे दार्जिलिंग की पहाड़ियों में ट्रेकिंग ट्रिप और रॉक क्लाइंबिंग कर सकते हैं। हिमाचल की पहाड़ियों में माउंटेनियरिंग पर जा सकते हैं या फिर राजस्थान के दूर तक फैले रेगिस्तान में ऊंट की सवारी की यात्रा को रोमांचकारी बना सकते हैं। इसके अलावा, वन्यजीव यानी वाइल्डलाइफ को देखना भी भारतीय साहसिक पर्यटन का प्रमुख हिस्सा है। देश के राष्ट्रीय उद्यानों में सफारी और जीप टूर की सुविधा भी प्रदान की जाती है। वाइल्डरनेस टूर एंड ट्रेवल पैकेज में स्कीइंग, पैरालाइडिंग, कैम्पिंग और स्कूबा डाइविंग जैसी गतिविधियां भी शामिल होती हैं।



कंपनियां ग्राहकों की पसंद के अनुसार, वाइल्डरनेस टूर पैकेज डिजाइन करती हैं। जैसा डेस्टिनेशन होगा, उसी अनुसार यात्रा का खर्च आएगा। विदेश की यात्रा करने पर ये खर्च लाखों में हो सकता है। जैसे, एक मशहूर ट्रेवल कंपनी ने 'गेट लॉस्ट' नाम से एक पैकेज डिजाइन किया है। इसके तहत यात्री खुद को खोजने में खो जाते हैं। दरअसल, उन्हें किसी अनजान इलाके में छोड़ दिया जाता है, जहां से उन्हें खुद ही बाहर निकलना होता है। कुछ वेसे ही जैसे 'मैन वर्सेज वाइल्ड' टीवी शो में बेयर ग्रिल्स किया करते हैं। हां, वाइल्डरनेस टूर के दौरान कंपनियां जीपीएस और सैटेलाइट ट्रैकर से अपने यात्रियों पर नजर रखती हैं, ताकि किसी परेशानी में उनकी मदद कर सकें। \*

### वाइल्डरनेस टूर के फायदे

वाइल्डरनेस ट्रेवलिंग को आज एक हीलिंग थेरेपी की तरह देखा जा रहा है। इसमें यात्री जब अकेले कठिन रास्तों से गुजरते हुए अपनी मंजिल तक पहुंचते हैं, तो उनका आत्मविश्वास कई गुणा बढ़ जाता है। इससे वे जिंदगी में आने वाली चुनौतियों का बेहतर तरीके से सामना करना सीख लेते हैं। इसमें न केवल रोमांच होता है, बल्कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। तनाव कम होने से नई ऊर्जा का अनुभव करते हैं। प्रकृति के साथ रहने से उससे रिश्ता गहरा होता है। इसमें दुनिया घूमने का मौका मिलता है। नई जगहों और संस्कृतियों को जानने से किशोरिता भी बढ़ती है।

बैंकिंग फ्रॉड से संबंधित घटनाएं आए दिन देखने-सुनने को मिलती रहती हैं। ऐसे में जरूरी है कि बैंक से संबंधित तमाम गतिविधियों के दौरान विशेष सावधानी बरती जाए। इसके लिए बैंक, एटीएम, यूपीआई और नेट बैंकिंग से संबंधित नियम जानना जरूरी है।

## जरूर जानें एटीएम-यूपीआई नेट बैंकिंग से जुड़े रूल्स



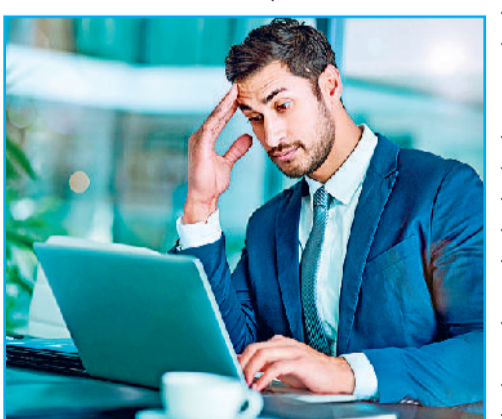
अवेयरनेस

प्रणाकांत कश्यप

इन दिनों बढ़ती आर्थिक धोखाधड़ी और बैंकिंग फ्रॉड के मद्देनजर प्रत्येक उपभोक्ता को एटीएम, यूपीआई, नेट बैंकिंग और बैंकिंग से संबंधित अन्य नियम जानने जरूरी हैं। ये नियम भारतीय रिजर्व बैंक और बैंकों की ग्राहक सुरक्षा नीति के तहत आते हैं। इन बैंकिंग नियमों की जानकारी के अभाव में आप इकोनॉमिक फ्रॉड के शिकार बन सकते हैं।

**जानें आरबीआई के नियम:** इस नियम के तहत किसी भी सरकारी या श्रेड्युल्ड प्राइवेट बैंक में अगर आपके किसी खाते से कोई धोखाधड़ी हो जाती है तो आपका नुकसान पूरी तरह से बच सकता है बशर्ते इस धोखाधड़ी के तीन दिन के भीतर आप अपने बैंक को इस धोखाधड़ी की लिखित सूचना दें। अगर आप बैंक को अपने साथ हुई धोखाधड़ी की सूचना तीन दिन के भीतर न देकर चार से सात दिनों के भीतर देते हैं तो आपके सेविंग अकाउंट में 5000 से 25 हजार तक

किसी के साथ शेरार न करें। अगर कभी बैंक कर्मचारी भी इसकी मांग करता है, तो आपको उसे यह नहीं देना चाहिए, क्योंकि आरबीआई के नियम के तहत कोई बैंक कर्मचारी अपने बैंक के ग्राहकों से यूपीआई पिन नहीं मांग सकता। अगर आपको रिक्वेस्ट मनी या कलेक्ट रिक्वेस्ट जैसी कोई सूचना मिलती है तो उसे ध्यान से चेक करें, गलती से अप्रूव करने पर आपके अकाउंट से पैसा कट सकता है और बैंक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होगा। पर हां, अगर आपने कोई यूपीआई ट्रांजेक्शन किया है और ट्रांजेक्शन फेल हो गया है, लेकिन आपका पैसा कट चुका है तो तुरंत शिकायत करें। सामान्यतया तीन दिनों में अपने आप ही कटा हुआ पैसा वापस आ जाएगा।



**एटीएम का इस्तेमाल:** यदि एटीएम से पैसा निकलते समय पैसा न निकले और बैलेंस कट जाए तो तुरंत संबंधित बैंक से इसकी शिकायत करें। पांच कामकाजी दिनों के भीतर आपका पैसा वापस आ जाएगा। जहां तक एटीएम ट्रांजेक्शन लिमिट का सवाल है तो मेट्रो शहरों में हर बैंक ग्राहक को तीन ट्रांजेक्शन प्रतिमाह मुफ्त है। अगर आप किसी गैर मेट्रो शहर में रहते हैं तो आपको

पांच बार किए गए ट्रांजेक्शन के लिए भी कोई फीस नहीं देनी पड़ती। लेकिन इससे ज्यादा बार की ट्रांजेक्शन पर बैंक की तय फीस देनी पड़ती है। अगर आपने एटीएम से ट्रांजेक्शन के दौरान तीन बार गलत पिन डाल दिया है तो 24 घंटे तक के लिए आपका खाता ब्लॉक हो जाएगा। 24 घंटे के बाद आप पुनः सही पिन डालकर एटीएम से ट्रांजेक्शन कर सकते हैं।

**नेट बैंकिंग से संबंधित नियम:** नेट बैंकिंग के लिए टू फैक्टर ऑथेंटिकेशन अनिवार्य है जैसे ओटीपी और पासवर्ड। अगर लंबे समय तक आपका नेट बैंकिंग अकाउंट एक्टिव नहीं रहता है तो आपके अकाउंट से ऑटो लॉग आउट हो जाएगा। हर तीन से छह महीने के भीतर आपको अपने नेट बैंकिंग अकाउंट का पासवर्ड चेंज कर लेना चाहिए। कभी भी ईमेली गैस या ब्रेक किए जा सकने वाले पासवर्ड न बनाएं।

**बैंकों की जिम्मेदारी:** धोखाधड़ी से संबंधित किसी भी रिपोर्ट को बैंक को दस कार्य दिवस में हल करना होता है यानी आप जो शिकायत करते हैं, उसकी जांच उन्हें दस दिन के भीतर करनी होती है। अगर बैंक दस दिनों तक आपकी रिपोर्ट में जांच पूरी नहीं करती, तो कानून के हिसाब से वह आपके अकाउंट से हुई धोखाधड़ी की रकम पर ब्याज भी देगा। साथ ही बैंक आपके पैसे की सुरक्षा के लिए ओटीपी, एसएमएस अलर्ट, लिमिटेड सेंटिंग, कार्ड ऑन/ऑफ फीचर देने के लिए भी बाध्य है। हर बैंक अपने ग्राहक को साइबर क्राइम की रिपोर्ट कराने के लिए 1930 नंबर पर तत्काल कॉल करने की सुविधा देती है ताकि धोखाधड़ी को तुरंत रोका जाए। इसके अलावा [www.cybercrime.gov.in](http://www.cybercrime.gov.in) इस आधिकारिक ऑनलाइन पोर्टल पर आप ऑनलाइन रिपोर्ट कर सकते हैं। बैंक आपके दावे को सही माने, इसलिए एफआईआर या ऑनलाइन शिकायत का रसीद, कर्मचारी नंबर अपने पास रखना जरूरी है। \*

धर्म-कर्म  
गुणेंद शर्मा

**पितृ-पक्ष** में हम पूर्वजों को याद करते हैं और उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं। इन दिनों हमें अपने मन को शांति एवं पवित्र रखकर पितरों के लिए बताए गए अनुष्ठान करने चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं तो पितृ प्रसन्न होकर हमें सुख, शांति एवं समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं।

**पवित्र अवसर है पितृ-पक्ष:** पितृ-पक्ष पूर्वजों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान प्रकट करने का एक विशेष, पवित्र अवसर है। पितृपक्ष काल में परिजन न केवल पूर्वजों को याद करते हैं, बल्कि उनकी आत्मा की शांति एवं मुक्ति के लिए विभिन्न अनुष्ठान भी करते-कराते हैं। श्राद्ध-पक्ष में पितरों के प्रति श्रद्धा भाव से किए जाने वाले अनुष्ठानिक कार्य कल्याणकारी माने गए हैं।

**पौराणिक मान्यता:** पुराणों में वर्णित श्राद्ध कर्म द्वारा लोग पितरों-पूर्वजों का स्मरण कर, उन्हें श्रद्धा अर्पित करते हैं। अपने जन्म एवं जीवन दाताओं को याद करते रहना, इसके लिए उनका आभार प्रकट करना, पुत्र-पौत्रादि का धर्म है। निश्चित रूप से ऐसा कर मन को शांति मिलती है। गरुड़ पुराण के अनुसार जब किसी व्यक्ति को मृत्यु हो जाती है, तो उसकी आत्मा तुरंत मोक्ष प्राप्त नहीं करती, बल्कि विभिन्न योनियों से होते हुए पितृलोक में पहुंचती है। यदि मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार तथा उसके बाद के कर्मकांड ठीक से नहीं किए जाएं या हो पाएं, तो मृत-आत्मा भटकती है एवं अतृप्त रहती है। ऐसे में पितरों का अतृप्त आत्मा अपने वंशजों से रुठ हो जाती है। पितरों के अतृप्त आत्मा की स्थिति में परिवार में विभिन्न प्रकार की विघ्न-बाधाएं आती हैं, जिसे पितृ दोष कहा जाता है।

## मुश्किल नहीं है कुछ भी अगर ठान लीजिए

टूढ़ इच्छा शक्ति, मेहनत और लगन के बल पर जीवन में कुछ भी हासिल किया जा सकता है। जीवन में सफलता पाने के कुछ गोल्डन रूल्स हैं, जिन्हें फॉलो करके मुश्किल से मुश्किल लक्ष्य को साधा जा सकता है।

सेल्फ मोटिवेशन / शिखर चंद जैन

**म**हान संत स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को हमेशा निडर, कर्मठ और सकारात्मक सोच रखने की प्रेरणा दी। स्वामी जी कहा करते थे, 'जो भी करो पूरी लगन और एकाग्रता से करो। खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।' युवाओं को प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए दुनिया भर के विद्वानों और मोटिवेशनल स्पीकर्स ने समय-समय पर बड़ी कारगर, महत्वपूर्ण और उपयोगी बातें कही हैं। इनके बारे में आप भी जानिए।

**जरूरी है सेल्फ कॉन्फिडेंस:** अगर आप जीवन में सफल होना चाहते हैं तो खुद को दायरे में बांधना बंद करें और पूर्वाग्रह से मुक्त रहने की कोशिश करें। ऐसा कभी ना सोचें कि जो कभी आपके किसी मित्र या परिवार के किसी सदस्य ने नहीं किया वह आप भी नहीं कर सकेंगे। आपको अपनी क्षमताओं और कमियों को पहचानना होगा और खुद को इस योग्य बनाना होगा कि आप जो चाहे कर सकें।

**न समझें खुद को कमजोर:** डर हमें जीवन में कुछ नया नहीं करने देता। नई स्किल सीखने, चुनौतियां स्वीकार करने, नया प्रोफेशन या बिजनेस करने में असफल होने का जोखिम होता है। लेकिन इस जोखिम या असफलता के डर से कोशिश नहीं करना बिल्कुल भी सही नहीं है। जो खुद को कमजोर समझते हैं या डरते रहते हैं, वे जीवन में कुछ भी नया या बड़ा हासिल नहीं कर पाते हैं।

**पुस्तक 'करेज एंड कॉन्फिडेंस एन एंथोलॉजी' के लेखक नॉर्मन विसेंट पील ने अपनी पुस्तक में लिखा है, 'डर लोगों को शारीरिक रूप से कमजोर बना देता है। किसी न किसी रूप में डर लोगों को वह हासिल करने से रोक देता है, जो वे जीवन में वाकई हासिल करना चाहते हैं।'**

**एकाग्र होकर काम करें:** एक समय में एक काम करें और ऐसा करते समय अपनी पूरी ऊर्जा और ताकत उसमें डाल दें और बाकी सब कुछ भूल जाएं। आज के डिजिटल युग में विभिन्न माध्यमों से सूचनाओं और जानकारीयों की बाढ़ ने हमारे मस्तिष्क को एकाग्रता को छीन लिया है। चाहे पढ़ाई-लिखाई करनी हो या वर्क प्लेस पर अपना हिसाब-किताब लिखना हो, अपने ग्राहक से डील करनी हो या फिर कोई प्रोजेक्ट बनाना हो। आप कोई भी काम तभी ठीक से कर सकते हैं, जब आप उसे पूरी तरह एकाग्रचित होकर करें।

**पुस्तक 'हाइपर फोकस' के लेखक क्रिस बेली लिखते हैं, 'अगर आपको अपने चंचल चित्त को स्थिर करना है तो सबसे पहले फालतू चीजों पर अनफोकस करें।' वे कहते हैं कि आज हम बिना ध्यान बंटए कंप्यूटर पर सिर्फ 40 सेकेंड ही लगातार काम कर पाते हैं। इस**



समय को बढ़ाकर ही हम अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकेंगे। उन्होंने लिखा है, 'हाइपर फोकसिंग से ही हम अपना सबसे बेहतरीन संस्करण बन सकते हैं।'  
**समस्याओं को धैर्यपूर्वक हल करें:** किसी समस्या के सामने आते ही अगर आप घबरा जाते हैं या हड़बड़ा जाते हैं तो जल्दबाजी में न सही उपाय सोच पाते हैं, न ही उसका हल निकाल पाते हैं। यहाँ तक कि आप अपने सच्चे और विश्वसनीय मददगार का नाम भी याद नहीं कर पाते। इस स्थिति में समस्या के एक ही हिस्से पर आपका नियंत्रण होता है और वह है आपकी प्रतिक्रिया। समस्याएं हमारे भीतर के सर्वश्रेष्ठ गुणों को बाहर निकालती हैं, क्योंकि मुसीबत में ही हम अपनी क्षमताओं के बारे में ठीक से सोच पाते हैं। पुस्तक 'थिंकिंग फास्ट एंड स्लो' के लेखक डेनियल कानमैन कहते हैं, 'जब आप चिंतित होने की बजाय किसी समस्या को रचनात्मक तरीके से हल करने की कोशिश करेंगे तो ज्यादा प्रभावशाली

बनेंगे। परिणामस्वरूप आप खुद को पहले से ज्यादा बड़ी समस्याएं हल करने के लायक बना लेंगे।'  
**अनुशासन का पालन करें:** स्वतंत्रता और मनचाहा करने की छूट लेना हमारे स्वभाव में होता है। लेकिन यह विवेकपूर्ण, संयमित और अनुशासन युक्त होनी चाहिए। यह आप पर निर्भर करता है कि आप सीमा में रहकर अपनी क्षमता से जीवन को उत्कृष्ट बनाएं या उसकी उपेक्षा करके अपने लिए दुख आमंत्रित करें। स्वच्छता वास्तव में स्वतंत्रता नहीं है। इसका परिणाम अन्ततः विनाश ही है। इस संदर्भ में बेस्ट सेलर पुस्तक 'द नाउ हैबिट' के लेखक नील फियोरे ने कहा है, 'दिमाग वही कारण चाहता है जो उसे पसंद है। लेकिन जो व्यक्ति जीवन में अपने दिमाग की पसंद और सुविधा से चलता है वह कभी कुछ हासिल नहीं कर पाता।' इसलिए जरूरी कामों को टालने की बजाय प्राथमिकता से करना जरूरी है। \*

आज से पितृ पक्ष आरंभ हो रहे हैं। पुराणों में इस दौरान अपने पूर्वजों को श्राद्ध एवं तर्पण के द्वारा तृप्त करने का विधान दिया गया है। इससे न केवल जीवन में शांति-समृद्धि आती है, पुरखों का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है।

## पुरखों से पाएं सुख-शांति समृद्धि का आशीर्वाद



किए गए तर्पण एवं श्राद्ध को स्वीकार करते हैं। जो व्यक्ति पूरी श्रद्धा से श्राद्ध करता है, उसे पितरों का आशीर्वाद प्राप्त होता है, जिससे

उसके जीवन में सुख, समृद्धि, आयु, यश, धन आदि की प्राप्ति होती है। मार्कंडेय पुराण में कहा गया है कि 'श्राद्ध से तृप्त होकर पितृ-गण श्राद्धकर्ता को दीर्घायु, संतति, धन, विद्या, सुख, राज्य, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करते हैं।' महर्षि सुमंतु के अनुसार, 'इस संसार में पितरों से बढ़कर कोई दूसरा कल्याणप्रद कर्म नहीं है।'

निवृत्तम किसी भी पवित्र धार्मिक-स्थल, नदी, तालाब, कुंड, सागर कहीं भी किया जा सकता है।  
**दान-पुण्य:** श्राद्ध-पक्ष में दान का मिलानक तर्पण करना चाहिए। यह पितरों को जल अर्पित करने का एक उपाय है, जिससे उनकी प्यास बुझती है।  
**श्राद्ध की विधि:** पितरों की मृत्यु तिथि के अनुसार श्राद्ध कर्म करना चाहिए। श्राद्ध के दिन किसी योग्य ब्राह्मण को आमंत्रित कर भोजन कराएं। भोजन में खीर, पूड़ी तथा पितरों की पसंद के सात्विक भोज्य पदार्थ शामिल करें।  
**पिंडदान:** आटा, जौ, चावल एवं तिल से बने पिंडों को पितरों को अर्पित किया जाता है। बोध गया जैसे पवित्र तीर्थ-स्थलों पर पिंडदान का विशेष महत्व माना गया है। हालांकि यह कार्य



तिल से बने पिंडों को पितरों को अर्पित किया जाता है। बोध गया जैसे पवित्र तीर्थ-स्थलों पर पिंडदान का विशेष महत्व माना गया है। हालांकि यह कार्य